[illegible]

श्री वेङ्कटेश्वर स्टीम प्रेस - बम्बई।

ता: १८-२-२९

श्रीमान् १०८, पाण्डेजी महोदय!

सादर वन्दे॰।

[illegible]

महामान्य!

आपका कृपा पत्र मुद्दतोंके बाद प्राप्त हुआ, शुभ [illegible] समाचार जाना गया। पत्र पाने से श्रीमान् के समाचार जाननेके लिये हृदयमें जो चिन्तना रहती थी, दूर हो गई। कारण कि कई सात मास पूर्व श्रीमान्‌का एक छपा पत्र मिला था, जिसमें देहली से पत्र निकालने का प्रश्न था। पश्चात् उसके लेखनों की एक पत्र मँगाया था, पर लिखने पर भी सन्तोषजनक उत्तर न मिल सकने से चिन्ता हो चुकी थी। हाल ही में स्वामी के [illegible] के कारण में [illegible] गया था, और इलाहाबाद में [illegible] रहा था, अभी बीस दिन [illegible] हुए हो चुके हैं। इसी दरमियान में चौधरी [illegible] जी के [illegible] से पत्र निकालने एवं [illegible] की सूचना मिल चुकी थी, पर वहाँ पहुँचने में [illegible] अन्य कारणों से असमर्थता प्राप्त हो चुकी। बड़ा [illegible] है कि आज श्रीमान् ने भी भूले हुए सेवक को याद किया है। सेवक आपकी आज्ञा पर [illegible] से जान तक देनेके लिये तैयार रहता है। आपको उन्नति शिखर पर चलाने का उद्योग [illegible] मौजूद था न मौजूद रहते हुए करता रहता है तब [illegible] में कुछ अड़चन नहीं है। श्रीमान् ने वेतन के विषय में जो बातचीत किया है सो आज तक तो आपको मालूम ही है कि जो कुछ दिया है उसने सहर्ष स्वीकार किया है, कभी भी झगड़ा [illegible] नहीं हुई। पर इस समय मेरी आर्थिक स्थिति [illegible] होजाने से [illegible] में यदि [illegible] होता तो ४०) चालीस और [illegible] हुए ५५) से काम में गुजर न होगा। कार्य के लिये आपको मालूम ही है कि इसी ५५) में १० घंटा तक [illegible] की देनी

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

INDIA

POST CARD

THE ADDRESS ONLY TO BE WRITTEN ON THIS SIDE

HALF ½A ANNA

AJMER 20 FE 29 8.30 A.M.

श्रीमान् पंडित

विजयसिंहजी पथिक

मार्फत—कमलों में

राजस्थान-सन्देश

कार्यालय

अजमेर

(Ajmer)

(2)

S. O. P.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(3) (5)

३/३/७०

श्रीमान पाठक जी

मेरी हालत बहुत गंभीर [illegible]
है १४/१५ दिन से ९५/२० [illegible] बुखार रहता
था पहुँच जायें इस बीच [illegible] दवा का हो रहा
यहाँ आयुर्वेदिक [illegible] कर रहा है।
यहाँ कुछ आराम नहीं रहा। हालांकि
४० एकड़ [illegible] फलों वाला बगीचा
[illegible] मील दूर सुन्दर स्थान में है यहाँ
[illegible] हूँ। आपकी दवाई चल रही है
[illegible] कुछ नहीं मालूम होता। शान्ति
[illegible] श्रीमती जी को अपने पास बुलाकर उनके
लिखी [illegible] हालत देना। आपका वही – [signature]

(3)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ESTABD. 1835.
PHONE 178.
Proprietor
VAIDYARAJ
Pt. KHYALIRAM
DWIVEDI.

Khyaliram Ayurvedic Pharmacy

Manufacturers of Ayurvedic Madicines.

(Has brought about a new era in the Ayurvedic world)

Branches
PRABHAKAR
AUSHADHALAYA
ADITYAWARYA
BAZAR, INDORE.
Wholesale Branch
MAROTHIA BAZAR
INDORE.

(4)

प्रियवर ६।११।३८

पत्र आपका ता० १४ $\frac{११}{३८}$ का मिला।
आपका उद्योग बड़ा ही सराहनीय है परन्तु (5)
आज कल इतना नाजुक समय है कि सहायता देनेवाले
लोगों के छक्के छूट जाते हैं। इसलिये इधर से
ओर से आशा देना व्यर्थ है वहीं [illegible] काइल तक
व्यवस्था का प्रबन्ध कर सकते हैं। [signature]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

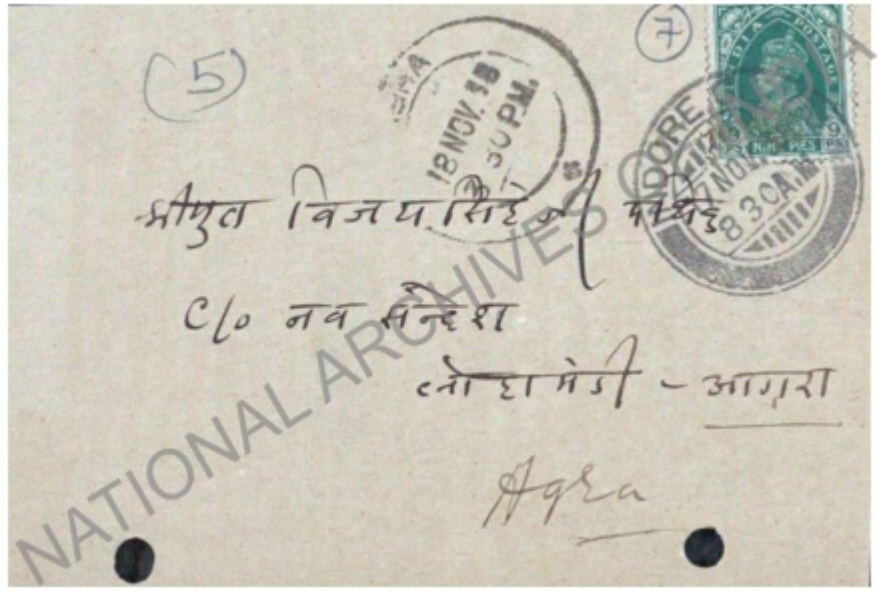

(5)

(7)

18 NOV. 38
30 P.M.

INDORE
17 NOV
8 30 A.M.

श्रीयुत विजयसिंह जी पथिक

C/o नव सन्देश

लोहामंडी - आगरा

Agra

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

S. F.
F. Ma.—9₂

(7)

(8)

Acknowledgment of Receipt
Avis de Réception

The undersigned declares / Le soussigné déclare { that an insured letter / qu'une lettre avec valeur déclarée — that a registered article / qu'un objet recommandé } to the address mentioned on the left-hand half of the address-side / à l'adresse mentionnée sur la partie gauche du recto

and originating from / et provenant de Dargah Bázar has been duly / a été dûment

delivered on the / livré le 4th March 19 29

Stamp of the / Timbre du

GRANTHAM
A
MR
29

Signature— / Signature— (1) [illegible] Hodson

of the addressee; / du destinataire; — of the head of the delivering office: / du chef du bureau distributeur:

office of delivery, / bureau distributeur.

(1) Note.—This acknowledgment should be signed by the addressee or, if the regulations of the country of delivery permit it, by the head of the office of delivery, and subsequently returned and forwarded, by the first mail, direct to the address indicated on the reverse.

Note.—Cet avis doit être signé par le destinataire ou, si les règlements du pays de destination le comportent, par le chef du bureau distributeur, et renvoyé ensuite, par le premier courrier, directement à l'adresse indiquée au recto.

9

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

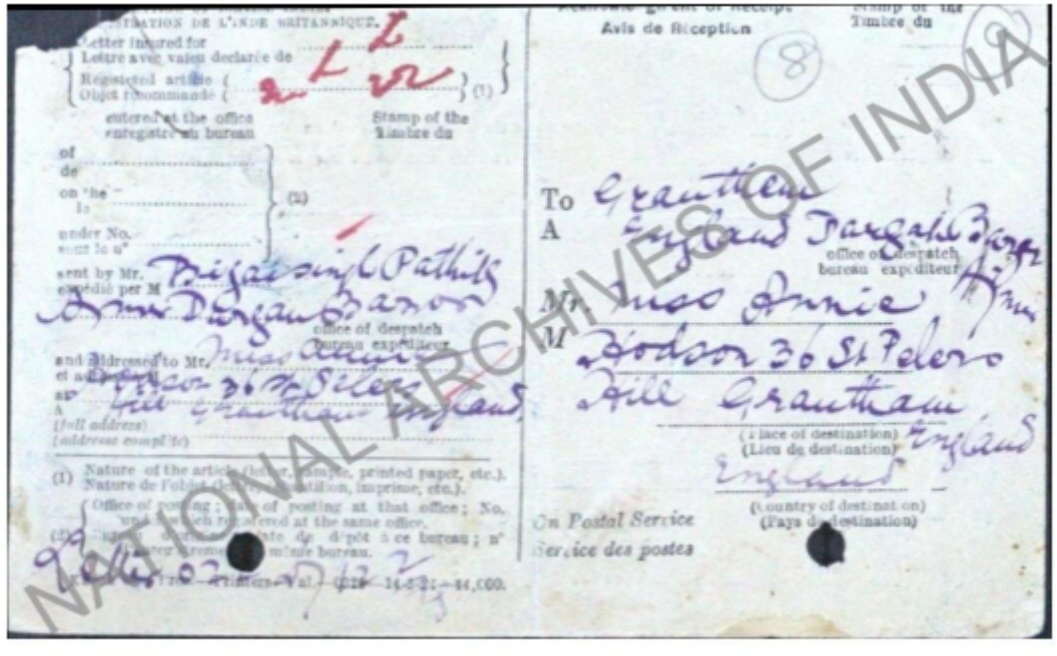

ADMINISTRATION DE L'INDE BRITANNIQUE.

Letter insured for
Lettre avec valeur declarée de

Registered article
Objet recommandé
} (1)

entered at the office
enregistré au bureau

Stamp of the
Timbre du

of
de

on the
le
} (2)

under No.
sous le n°

sent by Mr.
expédié par M Bijaisingh Pathik Arain Dargah Bazar

office of despatch
bureau expéditeur

and addressed to Mr. Miss Annie
et adressé à Dodson 36 St Peters
Hill Grantham England

(full address)
(adresse complète)

(1) Nature of the article (letter, sample, printed paper, etc.).
Nature de l'objet (lettre, échantillon, imprimé, etc.).

(2) Office of posting; date of posting at that office; No. under which registered at the same office.
Bureau d'origine; date de dépôt à ce bureau; n° d'enregistrement au même bureau.

... Printers ... 14-6-2 ... 44,000.

Avis de Réception

Stamp of the
Timbre du

(8)

To Grantham
A England Dargah Bazar

office of despatch
bureau expéditeur

Mr. Miss Annie
M Dodson 36 St Peters
Hill Grantham

(Place of destination)
(Lieu de destination) England

England

(Country of destination)
(Pays de destination)

On Postal Service
Service des postes

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(10) आपको विदित होगा कि मैं इस समय बेकार हूँ

स्थिति लाचार करने के लिये मजबूर कर रही है इसलिये

कुछ सहायता दे सकें तो बड़ा ही [illegible] होऊँगा। (6)

यह तो आप जानते ही हैं कि सम्पादन के अतिरिक्त

कार्य काफी अनुभव है। 'दैनिक हिन्दू-संसार' और 'आर[illegible]

मैंने [illegible] । [illegible] मेरे प्रबंध कार्य से प्रसन्न

[illegible] भी दिया था। विज्ञापन- [illegible] (7)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

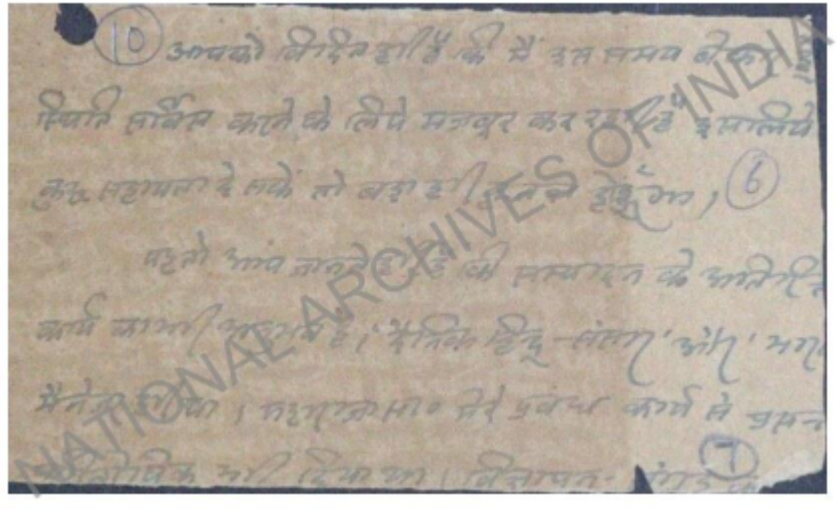

का सर्वश्रेष्ठ भाग
भारत के दीन दुखियों
के साथ रह कर बीता
है और यह बात मुझे
नहीं है कि मैं उनसे
एक होकर रहा हूं।
राज्य के एक दीन सेवक
की तरह मैंने अपने
देश की सेवा की है। और
केवल 'ईश्वरेच्छा' ही
से प्रेरित होकर मैं
अपनी इस वर्तमान
स्थिति पर पहुंचा हूं
पर केवल इसीलिए
मैं वह पाठ जो मैंने
~~भारी~~ दुष्काल में सीखा
है नहीं भूल सका।
मुझे ~~[illegible]~~ प्रजातंत्र
का पूरा ज्ञान है। पर
~~[illegible]~~ प्रजातंत्र के
मेरा संबंध ~~[illegible]~~ ~~पश्चिमी~~
पाश्चिमीय ढंग के
प्रजातंत्र से नहीं है
वरन 'प्रजातंत्र' शब्द

(11)

Dear Sir

It seems there are some men from Jodhpur & Sirohi State, who are staying in Dak Bungalow. These people are asking my servants to steal some documents from my office. For this crime they do not only offer them handsome amount of money but also threat to murder them if they do not comply with their

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(11) (13)

पं० मोहन चन्द्र वैद्य शास्त्री
मालिक श्री मोहन औषधालय
झालरापाटन—R. P.

S/OdA.33

ता: २ ५/२४

श्रीमान् पूज्यवर वन्दे!

तार का उत्तर [illegible] धन्यवाद
श्रीमान् के पत्र का उत्तर [illegible] प्रकार है।
बाबू कन्हैयालाल [illegible] का भी खयाल
पूछा जात[illegible] विषय में आपके ही
अनुकूल है। कौटुम्बिक जिम्मेदारी के बाबत
बात यह है कि इनके पिता यहीं वकील
हैं [illegible] अपना निर्वाह ठीक तौर पर
आता है और इनके माता है, भाई
है, तीन बहिन है और दादी भी है। बाबू
कन्हैयालाल स्टुडेन्ट लाइफ से अभी निकले ही
हैं वैसे तो यह मुस्तैद सच्चरित्र, सुशील (13)
एवं उत्साही हैं, अब तक भी [illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(12) (14)

करते रहे हैं. एवं विभाग श्रीमान् के हाथ
है। यह मैं सिफारिश करता हूँ कि कोई
भी काम उनकी जिम्मेदारी पर छोड़ देने से
श्रीमान् को कोई धोखा नहीं होगा। मैं
बाबू कन्हैयालाल ता: ६ जुलाई तक आप
के पास पहुँच जायेंगे। और उनके साथ
सिर्फ श्रीमान् को आया हुआ टेलिग्राम
दे दूँगा जो इनके पास भेजा। योग्य सेवा
लिखते रहिये। कृपा बनी रहे।

आपका

पं. मोहनचन्द्र शास्त्री

झालावाड़

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(13) (15)

तरुण राजस्थान

[राजस्थान का उच्च कोटि का राष्ट्रीय साप्ताहिक]

अजमेर तिथि [illegible]

[illegible],

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(14)

(16)

[illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

R. [illegible]

वन्दे:

कानिजा (17)
ता: १०।९।२९

(15)

श्रद्धेय जी

आपका कृपा पत्र ता: ७-९-२९ मिला पढ़ कर प्रसन्नता हुई। कुशल सम्वाद बराबर आते रहेंगे। राम-चन्द्र व मेरो इशा का मैं क्या निवेदन करूं बुरी शराब की दुकान के व्यसन में फंसे हुए हैं शीघ्र ही छोड़ छाड़ कर सही रास्ते पर आवेंगे।

आज मेरे मुकद्दमे की पेशी थी फरस्टक्लास शहादत पैरोकार के बयान के बाद आज ही सफाई के लिये ता: पेशी १४।१०।२९ मुकर्रर हुई शहादत से मेरा भेद खोजाना, साबित हुआ है गवाहों के बयान की नकल शीघ्र भेजूंगा। सफाई से काम याबी की आशा है।

रिश्वत वाले मुआमले की तफ्तीश कर के रिपोर्ट पेश करूंगा।

शेष कुशल, योग्य सेवा लिखें।

आपका
R. m. Varma

(17)

INDIA

POST CARD

WRITING SPACE | ADDRESS ONLY

AJMER DELY. 12 SEP 8 A.M.

GWALIOR गवालियर

सेवा में

वी. एस. पथिक

राजस्थान सन्देश

कार्यालय अजमेर

ajmer

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(17) (19)

शान्ति सदन
बिठूर - कानपुर
१५।३।३०

माननीय बन्धु पंडितजी,
वन्दे [illegible]

कृपा कार्ड मिला। मैं तो [illegible] [illegible] दर्शन [illegible] की आज्ञा को अभी [illegible] था मैं २ अप्रैल ही पहुँच जाता। इसी [illegible] मैं [illegible] गया था किन्तु कानपुर [illegible] के कारण, [illegible] गया था। अब डॉ. [illegible] [illegible] की [illegible] इनको [illegible] लिए एक [illegible] [illegible] किया जावे और मैं पहुँच जाऊँ। [illegible] के लिए तो [illegible] [illegible] हैं जो [illegible] विद्यापीठ के [illegible] बंगला, मराठी, गुजराती जानते हैं, [illegible] हैं और [illegible] से [illegible] के [illegible] [illegible] भी [illegible] हैं। मैं [illegible] तो उनके [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कि वह [illegible] [illegible] है। मैं [illegible] [illegible] नहीं हूँ। अच्छी तरह, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आप के [illegible] हैं [illegible] [illegible] की बात है। इसकी [illegible] के लिए मैं [illegible] आप को [illegible] [illegible] [illegible]

POST CARD

WRITING SPACE

[illegible]

... FOR THE ANSWER.

ADDRESS ONLY

[illegible]

[illegible]

Ajmere

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

F.61A.29

इलाहाबाद (21)
2.4.28

प्रिय चतुर्वेदी जी! सादर वन्दे० (19)

कृपापत्र मिला। भरतपुर में जो [illegible] का [illegible] किसी हिन्दी [illegible] ~~[illegible]~~ [illegible] आरम्भ करना तो व्यर्थ है पर मैंने [illegible] कर देखा कि [illegible] [illegible] [illegible] न हो सकेगा। यदि किसी प्रकार इसकी व्यवस्था कर सकें तो मैं सेवा करने के लिये प्रस्तुत हूँ। आप 'प्रवासी' ने जो offer आया है पर वहाँ जाना नहीं चाहता। आजकल मैं 'देवनागरी [illegible] में [illegible]' नाम की पुस्तक लिख रहा हूँ क्या यह विषय उचित रहेगा? क्या [illegible] आरम्भ करने की इच्छा है? आशा है सकुशल हैं। मेरे रहने के लिये [illegible] की क्या व्यवस्था रहेगी?

भवदीय

(21)

धीरेन्द्र वर्मा

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

INDIA

POST CARD

WRITING SPACE

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

HALF ½A ANNA

AJMER DELY. 29 APR 29 10.30 A.M.

ETAWAH

(20)

श्री विजयसिंह जी 'पथिक'

'राजस्थान केसरी कार्यालय'

Ajmer

THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

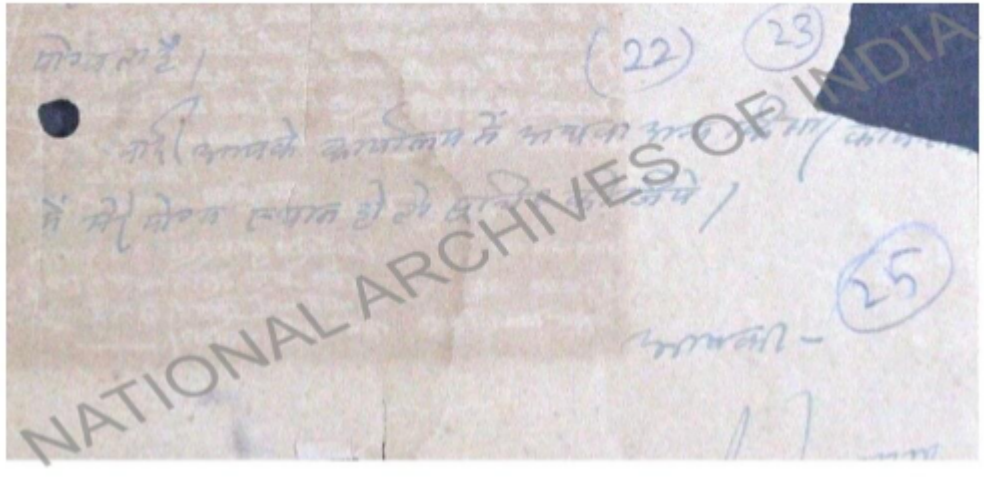

(22) (23)

भेजता हूँ।

यदि आपके कार्यालय में आपका [illegible]

में कोई लेख स्वीकार हो तो [illegible] जाये।

(25)

आपका -

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

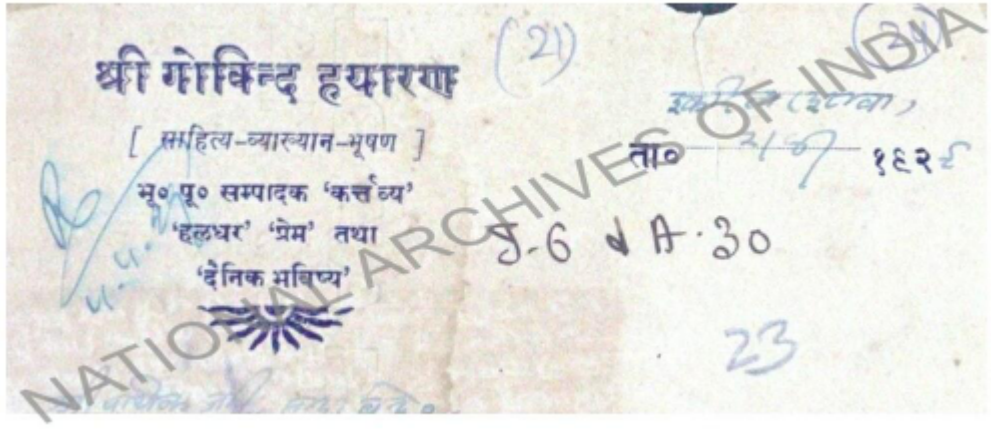

(21)

(34)

श्री गोविन्द हयारण

[साहित्य-व्याख्यान-भूषण]

भू० पू० सम्पादक 'कर्त्तव्य'

'हलधर' 'प्रेम' तथा

'दैनिक भविष्य'

ता० 3/7 १६२६

S-6 A-30

23

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(23)

6/C-5025

From-

'The Rajasthan Sandesh' Office.

Ajmere.

(25)

To,

The Municipal Secretary.

Ajmere. D/ July 15, 1929.

Dear Sir,

The vicinity of the House in which I have got my press is stinking badly. I think if this is permitted ~~to be what it is~~, it would shortly produce some Epedemic. The labourers who work in the Publi-shing House pass most of their time at my place, and it is but proper that I should care for their well-being even because of a business principl

The second thing is that my publishing House is a bit ~~out of~~ from the main road. The approach is almost a drain rather than a passable ~~road~~ most of the time. Specially in these days of rains one has to jump over several pools before he can get at the main road. The approach itself is so uneavan. So you will please see that this is brought into a lev regular drains are cut on both sides so that people may conveniently pas between them.

The third thing what is probably not hidden from you is that the sweeper sprays the dirty drain water on the roads. Please put a stop to this most unhygienic pactice; often the cess tanks are never cleaned and they are allowed to overflow. At least the pactice need be indulged in where filth is having its sway.

Thanking you in anticipation.

Yours Faithfully,

Editor 'Rajasthan Sandesh'.

27

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(24)

S. F. Progs.—26.

9-C-503

POST OFFICE.

(26)

No. F4/85/28

FROM

Rai Sahib Kishendial Singh,
~~THE~~ SUPERINTENDENT, of Post Offices,

~~Lower Rajputana~~ DIVISION.

To

Mr. B.S.Pathik,

Number of enclosures

President, Rajasthan Sewa Sangrah, Ajmer.

Dated Ajmer, the 6th July 1928,

SIR,

I have the honour to acknowledge the receipt of your letter dated 30.6.28 and to say that the matter is receiving my attention.

I have the honour to be,
Sir,
Your most obedient servant,

K. D. Singh

4.7.28.
M.L;Mital

Superintendent of Post Offices,
Lower Rajputana Division.

29

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Karim Bux/Cres. Printer, Cat—0202—1-5-24—

उत्तर दिया
अति आवश्यकता नहीं है

(25) S.G.d A.18

(27)

भगलपुरा।

मि॰ २६-७-२८.

श्रद्धेय पथिकजी,

सादर वन्दे।

मैं इस पत्र द्वारा आप को स्मरण दिलाना चाहता हूं कि आप के पत्र प्राप्त करने के पश्चात मैं आप की सेवा में दो पत्र भेज चुका हूं किन्तु आपने एक पत्र का भी उत्तर देने की कृपा नहीं की है। अतः मैं पुनः लिख रहा हूं कि आप जिस कार्य के लिये मुझे वहां बुलाना चाहते थे मैं उसके लिये तय्यार हूं। यदि आप वहां पर मेरी आवश्यकता समझते हैं तो कृपया लिख भेजिये। आप के पत्र पाने के साथ ही मैं वहां आने का विचार रखता हूं। यदि आप मेरे वहां आने की आवश्यकता नहीं समझते हैं तो इसकी भी सूचना देने की कृपा करेंगे, जिससे मैं आप के पत्र की व्यर्थ प्रतीक्षा न करता रहूं। आशा है पत्रोत्तर शीघ्र देने की कृपा करेंगे।

भवदीय:—

वासुदेव झा
ग्राम भगलपुरा।
पो॰ असरगंज
जि॰ मुंगेर (बिहार)

3)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

c/o श्री जमनालालजी बजाज,
वर्धा (सी.पी.)
ता. १-१०-१९२८.

पूज्यश्री पंडितजी,

मैं, अजमेरसे बम्बई और बारडोली हो लेकर, यहां आ गया था। जामनगर जाना भी बंद कर दिया और हरिभाऊजीके साथ, सत्याग्रहके पीछेसे [illegible], बिजोलिया जानेका था, सो भी रद्द कर दिया। तबसे मैं यहां ही हूं। पठन-अध्ययन आदि कर रहा हूं।

आपको विदित हो ही गया होगा कि मेरी शादी न की गयी है। कुछ अरसेसे मेरे मनमें यह सवाल बड़े जोरके साथ उठ आती है कि यदि विवाह करनेसे सेवाकार्योंमें विघ्न पड़ता हो, अच्छी शक्तिसे सेवा-कार्य न किये जा सकते हों, और यदि वह बंधनरूप होता हो, तो उस कार्यसे अलग रहना ही अच्छा है।

आदर्शमें यह सच्चा हो तो, व्यवहारमें भी [illegible] आपको, इतने समयका अनुभव होनेके कारण, इस बारेमें आपकी ही राय, उपयुक्त होगी। यह लेनेके लिए, पत्र लिखनेकी उत्कंठा बहोत दिनोंसे हो रही थी, आज वह पूर्ण होती है।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

२

आशा है, आप आपकी राय, विस्तृत लिख भेजेंगे; ताकि जो प्रश्न नजदीकके भविष्यमें सामने आनेवाला है, उसको हल कर सकूं।

प्रत्युत्तर लिखनेकी प्रार्थना करनेकी, और दीए हुए कष्टकी क्षमा चाहनेकी आवश्यकता इन पत्रोंमें नहीं देखी जाती है कि जो छोटे भाइने अपने गुरुजन भाइको लिखें हों। यह पत्र उस नातेसे ही तो लिखा गया है।

लि: जीवनदास गोविन्दजी

35

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(30A) आगरा — विलास कुटीर

F.G4 A32 [illegible]

ता. २८-९-२८

(28)

श्री माननीय पारसचन्द्र जी सादर वन्दे।

कदाचित् आपको स्मरण होगा पिछली साल जब आप आगरे आये पालीवाल जी से मिले थे। उस समय मैं सैनिक प्रेस इत्यादि का मैनेजर व प्रकाशक था। किन्तु कुछ समय से वहाँ से मेरा सम्बन्ध टूट गया। इधर "प्रताप" में आज "राजस्थान सन्देश" के प्रकाशन का विज्ञापन देखा। मेरी आन्तरिक इच्छा है कि आपकी सेवा करने का अवसर मुझे मिले अतएव प्रार्थना है कि यदि ~~[illegible]~~ कोई स्थान मेरे लायक हो तो सूचित कीजिये। 37

आशा है आप मेरे प्रस्ताव से सहमत होंगे और यथोचित उत्तर शीघ्र ही प्रदान कर कृतार्थ करेंगे।

भवदीय—

ओंकारनाथ शर्मा

INDIA
POST CARD
WRITE ON THIS SIDE
AJMER
RECY
29 JAN 29
10.30 A.M.
KIRAOLI
INDIA POSTAGE

Shree B.S. Pathik
"Rajasthan Sandesh" Office
Ajmer
(Rajputana)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ओम्

(32) (30)

कुशलगढ़ ता: २३-१-२९

F.6 d A 23

श्रीमान मान्यवर महोदय "पथिकजी" संचालक-
"राजस्थान सन्देश" अजमेर नगरे

प्रार्थनीय त्रिवेदी सरस्वतीनन्द शर्मा अध्यापक का सादर नमस्ते-स्वीकृत हो तदनन्तर श्रीमान की सेवामें सादर सविनय प्रार्थना यह है कि, राजस्थान सन्देश स्वकीय संस्थामें प्रचारकों एवं स्वयं सेवकों के लिये अनेक स्थान खाली हैं; इसलिये यह प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर विनयपूर्वक निवेदन करता हूं कि, इस सेवकको आप स्वकीय संस्था की तर्फ से कोई भी स्थान पर, नियुक्त करनेकी कृपा करें। यह सेवक ऐसा अधिक तो पारंगत विद्वान नहीं हैं, तथापि हृदय से हर्षपूर्वक, धार्मिक, सामाजिक, एवं राजनैतिक क्षेत्रमें उतरनेके लिये पूर्ण साहस कर रहा है, इसलिये, आप-देशोध्दारक विद्वानको ध्यान है कि, इस निःसहाय सेवकको आपके कार्य्य की पूर्ण शक्ति द्वारा साहस बढ़ाकर उत्साहित करें।

मुझे पूर्ण आशा है कि, आप श्रीमान महोदय शीघ्रही प्रत्युत्तर द्वारा सन्तोष देकर साहसी बनानेके लिये पूर्ण प्रयत्न करेंगे।

भवत् सेवक

Trivedi Saraswatinand Sharma
Post at- Kushalgarh

39

अगर [illegible] जी न हों तो
न होने पर यह पत्र उनकी सेवा में
भेज दीजियेगा ऐसी मेरी दूसरे महाशयों से
विनती है-

(33) Indore (31)
3/12/28

श्रीयुत महाशयजी नमस्ते

मैं कई सालों से इन पुराने पढ़ाने के लकीर के फकीर और देश

द्रोही लोगों के संसर्ग में रहकर मेरा मन इतना दृढ़ हो

गया है कि मैं आपलोगों के पास रहकर राष्ट्र की सेवा

कर सकूं: इसलिये प्रार्थना करने का साहस है कि अगर आप

मुझे अपना सकें तो बहुत ही उत्तम हो - मुझे ~~[illegible]~~

राम [illegible] आर्य नयागांव (नीमच) और रतनलाल

भाई [illegible] नयागांव जो आजकल आपके पास हैं ~~कुछ दिनों हुए~~

~~[illegible]~~ मुझे अच्छी तरह जानते हैं कुछ थोड़ा मेरे

41

विषय आप उनसे पूछ सकते हैं ~~रतनलाल की चिट्ठी~~ मेरे पास

AJMER
S.A.
5 DE 28

INDIA
POST CARD

WRITING SPACE | ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE
HALF ½A ANNA

AJMER
P.D.Y.
5 DEC 28
8.30

(34)

To
श्रीयुत बी. एस. पाथिक —
राष्ट्र सेनासंघ
Ajmer अजमेर

S.66A25

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

गांधाम

ता: ५
दिस.

महात्मनवर सादर प्रणाम।

मैं आपसे मिल कर उसी बेला ठीक ९ बजे यहाँ सकुशल पहुँच गया। यहाँ आने पंडित जी को दिखलाया है उन्होंने क्या उत्तर आता है, उत्तर आपको मिलेगा। वास्तव में मकान की ऊँचे से गिर पड़ी है, हाथ व पाँव में लगत चोट आई है. जैसे ही हो सका होसका सेवा में शीघ्र आने का प्रयत्न होगा। शेष कुशल है। नत्थूसिंह जी से कहें कि [illegible]

[illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

चाहें। मैं बहुत जल्दि आऊँगा। वहाँ
पर मेरी पं. मोहन चन्द्र जी का मै
बाद का कोई प्रबन्ध आया हो तो
[illegible] के लिये भेजदें तो
अच्छा होगा। पं. [illegible] जी [illegible]
[illegible] जी से [illegible] यथा
योग्य — [illegible] आपका
[illegible]
(मु. [illegible])

AJMER
6 AU 29
8 — A.M.

To,

B. S. Pathikji
'Rajasthan Sandesh'
Ajmer

Ajmer.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(34)

(35) (37)

१ सड़क

२ धानरुपेमानी लेकर धानकी
कुछ दो हैं जिनसे उनसे
लेना २० का भाव होता

३ बेगार

३ पुलिस की रुकावट

४ पंचोंसे ... पर मोहर
मा लगा लेना

५ ... पर ... चार

६ ... मजदूर को वेतन रखा गया
बेगार में बगीचा छोड़ जाता

तालाब के नाम पर ...

९ मंगल नाथ ने ... शालाने
पहला ७ ... को ... पर ... गालिया

45

चारही के रुपये २०० अनामे से कर लिया गया

15.10.29

P.O. Haldaur (Bijnor U.P.)
4 Oct. 29

(38)

श्रीमान् जी! वन्दे।

(37)

पूर्व पत्र का उत्तर देखता हूँ लेकिन उत्तर
अभी नहीं मिला। कृपया शीघ्र ही उत्तर दीजिये
तथा निश्चय [illegible] कि [illegible] की आवश्यकता है कि नहीं।
कृपया उत्तर [illegible] पूर्वपरिचित ही।

Yours Sincerely.
D.S. [illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

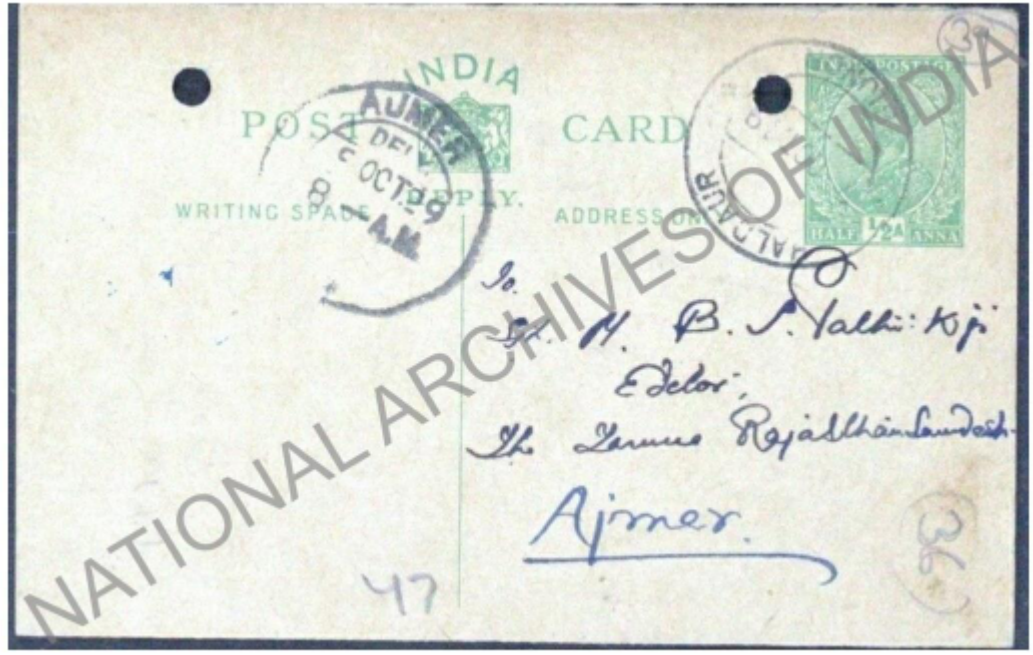

INDIA

POST CARD

REPLY.

WRITING SPACE | ADDRESS ONLY

AJMER DEL 8 OCT 29 8 A.M.

INDIA POSTAGE HALF ½A ANNA

To

Sri H. B. S. Nalkin Kiji

Editor,

The Famous Rajasthan Sandesh

Ajmer.

47

36

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(38) (40)

Tele.—"SANDESH"

Rajasthan Publishing House

(..............................Deptt)

No

Ajmer. 25.4.1932

Received the following letters:—

1. From Mr. B. S. Pathik addressed to Mr. Ishar Singh City Inspector, Ajmer regarding the relinquishment of the Rooms of Bhagat Singh Vachanalaya

Signature.

2. From Dr. Ambalal to Mr. Ishar Singh Kotwal Ajmer, proving that Mr. B. S. Pathik is the acting managing Trustee of the Vachanalaya since Babaji's conviction.

49

Signature

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

3. From Seth Chhagan Lal ji to Mr, Ishar Singh ji Kotwal, Ajmer showing that the rent of the Vachanalaya is paid by Babaji and Pathik ji both. And since Babaji's conviction Mr, Pathik ji has been paying the rent of the Vachanalaya, and some rent still remains due.

Signature.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

on leave [illegible] ओ३म् Haldaur Bijnor
7th September 1929.

श्रीमान् [illegible] जी,

सादर वन्दे।

यूँ तो आप जगत्प्रसिद्ध हैं ही, किन्तु [illegible] जी का विशेष परिचय
प्राप्त के कार्य कर्ता और डॉ० [illegible] जी से [illegible] मेरी
पर हार्दिक इच्छा है कि मैं [illegible] सेवा [illegible] पास रहता हुआ
करूँ यही इच्छा मैंने [illegible] पत्र द्वारा की थी उन्होंने
आपका [illegible] [illegible] निवेदन है। [illegible] इस
समय "Hindu Sangathan" Sahaik" Saharanpur" Weekly का
सम्पादन [illegible] Account etc. कार्यालय [illegible]
काम भी कर रहा हूँ। इसलिए मुझे [illegible] पत्र [illegible]
[illegible] के एकमात्र उपासक श्री [illegible]
[illegible] के [illegible] "उपन्यास [illegible]"

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

INDIA

POST CARD

WRITING SPACE | ADDRESS ONLY

HALDAUR

AJMER

SE 29

To

B. L. Pathik Esq.

C/o "Tarun Raj Sthan"

Ajmer

9/10/1935

ओ३म्   Haldaur Distt Bijnor

श्रीमान् पूज्यवर जी ! सादर वन्दे ।

कृपापत्र ता० १२/८ का मिला हाल [illegible] स० का सम्पादन तथा कार्यालय सम्बन्धी व्यवस्था [illegible] और प्राय: सभी [illegible] जैसे ज्ञाता रहा हिन्दी अंग्रेजी १०४५ तक संस्कृत प्रथमा तथा अन्य [illegible] बंगला व उर्दू । इसलिए पूर्व पत्र में भी श्रीमान् जी से अपने कार्य करने दिखलाने मे [illegible] कि इसका कोई [illegible] नहीं समझता । २- वेतन सम्बन्धी विषय आप स्वयं [illegible] निर्णय कर सकते हैं । आपसे [illegible] निवेदन मैं कर सकता हूँ । कई विशेष तथा आवश्यक

55

55

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

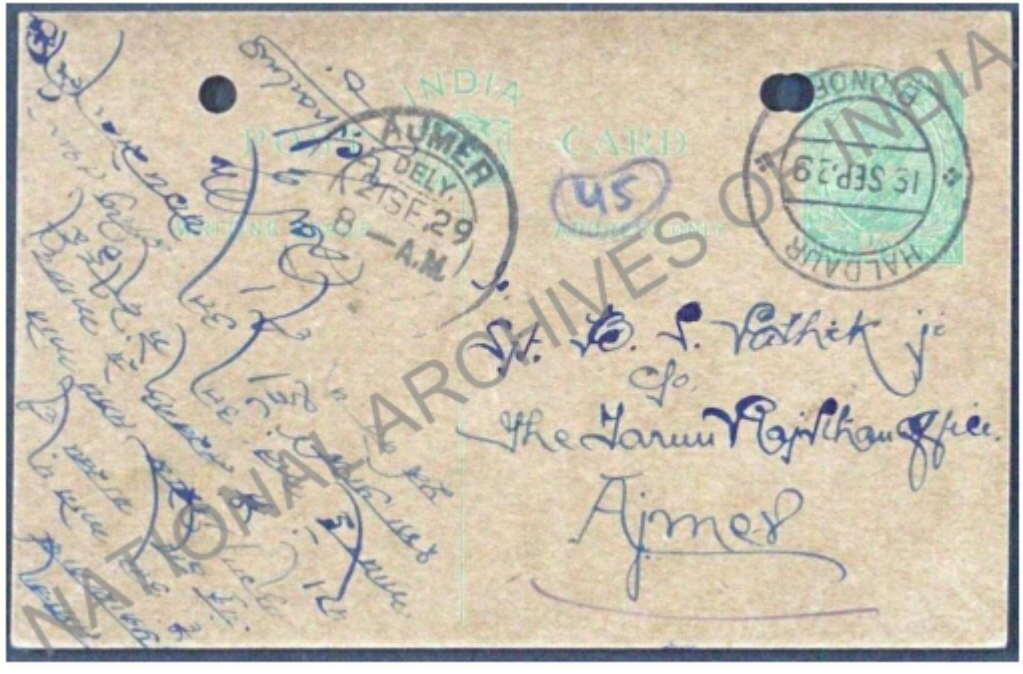

INDIA

POST CARD

AJMER
DELY.
21 SE 29
8 — A.M.

HALDAUR
BIJNOR
15 SEP 29

45

Sri ... Pathik ji
C/o
The Tarun Rajasthan Office.
Ajmer

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ओरछा [illegible]
सागर
ता० १२.११.२५

56

मान्यवर पथिक जी,

इन दिनों में मेरी पत्नी आँखों की चिकित्सा की एक [illegible] सूचना मिली जिसके कारण मैं अपना काम छोड़कर नौली [illegible] जाना पड़ा था और वहाँ मैं १४ दिन लगाने। इसीलिए मुझे देर हो गई [illegible] एक सप्ताह में मैं आपकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा।

शेष आनन्द है।

आपका —

[illegible]

57

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

48 (48)

राजस्थान सन्देश

ता: 30.८.२८

अजमेर।

श्री· श्रद्धेय पथिक जी

राजस्थान सन्देश

अजमेर।

मुझे खेद है कि मैं अब राजस्थान सन्देश की सेवा करने में असमर्थ हूँ अतः कृपा करके आप मेरे स्थान पर दूसरे व्यक्ति का प्रबन्ध करलें। मैं आर्थिक कठिनाइयों के कारण बिलकुल नहीं ठहर सकता और आपके यहां बढ़ने की संभावना नहीं अतः आप कृपाकर मेरा नोटिस स्वीकार कर आज ही इसका प्रत्युत्तर दें।

भवदीय

ऊमाशंकर शर्मा

राजस्थान सन्देश

अजमेर

59

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

मारवाड़ी रिलीफ सोसाइटी। (49)

(Regd. under Ind. Com. Act. 1913)

तारका पता :—"Sevasamaj" Calcutta.

संख्या..................

राजपूताना शिक्षा विभाग।

विद्यालय सलाम [illegible] पो॰ बगड़

ता॰ १८ — ११ — १९२९

पूज्य वा॰ श्री पथिक जी महोदय

सादर सप्रेम शत शत वन्दे —

आपका पत्र ता॰ १० ११/२९ को ही आ गया था। किन्तु मैं यहां पर उपस्थित नहीं था। आज [illegible] आया हूँ। [illegible] रिपेटेड प्रेस — कलकत्ता व बम्बई व लाहौर [illegible] व हिन्दुस्थान टाइम्स दिल्ली आदि को तार भेज दिया। [illegible] राजस्थान [illegible] राव बहादुर सिंह जी ने तार [illegible] को ही भेज दिया था।

मैं अभी छुट्टी ले आया हूँ। [illegible] इन्सपेक्टर जी [illegible] की शादी में गये हैं। उनके आने से पहिले आना कठिन है। [illegible] राय जी [illegible] सेवा में पत्र भेज रहा हूं। कि वह कब तक छुट्टी लेने [illegible] को तैयार होंगे। उनके पत्र प्राप्त होते ही फिर [illegible] करूंगा।

~~[illegible]~~ ता॰ १० ११/२९ का राजस्थान सन्देश न तो आदि राव बहादुर सिंह जी का प्राप्त हुआ और न कोई ही [illegible] है जो आना था वह ही मिला [illegible]

6।

मैनेजर जी से कहना मैं नाम का पत्र डाकखाना चला जाता है सो पता बदलवा दें।

(50)

सेवा योग्य काम सदा लिखते रहें।

भवदीय

[illegible] लाल [illegible]

पुनः – यदि राजबहादुर सिंह जी के यहाँ से रजिस्ट्री सो नहीं आई है ता. १-१२-२२ तक आ जाय तो भेजने में [illegible] जाय।

[illegible] लाल

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Appt file

(51)

अजमेर

पुष्कर
अजमेर
ता० १५-११-५५

मान्यवर ऋषिकजी,

मैं कल ता० १०-११-५५ [illegible]
से अजमेर के लिए [illegible]
लगभग तीन एक वर्ष से मुझे टोंसिल
की शिकायत है जिसके कारण सदैव
गले में खराश रहती है और कभी २ [illegible]
भी रहती है अतः [illegible]
और [illegible] आपरेशन करवाना
है [illegible] दिन बाद [illegible] टोंसिल
का इलाज केवल आपरेशन ही है।
[illegible] पेंट कौटर लगाने पर लाभ
नहीं हुआ। आपरेशन में एकआध
या दो दिन से अधिक नहीं लगेगा,

63

POST CARD

INDIA

WRITING SPACE | ADDRESS ONLY

AJMER
DELY
10 30 A.M.

RAJANANDGAON
15 NOV 29
4-5 P.M.

Sri B. S. Pathik

Editor "Rajasthan Sandesh"

Ajmer

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Replied 30/11/29.

ओरन Haldaur Distt Bijnor U.P.
d/ 25 Nov. 1929.

D.S. — वंदे । (53)

कृपापत्र [illegible] मिला हार्दिक धन्यवाद । इसके पूर्व श्रीमान जी का
कोई पत्र न मिलने के कारण ही स्मरणार्थ पत्र भेजा था ।
जो केवल श्रीमान जी ने लिखा है उसका वर्तमान स्थिति में साधारणतः
न Civil Disability हटना कठिन हुआ है ।

65

अतः यदि श्रीमान जी को इस प्रान्त के दौरे पर पुनः विचार
करने के लिए निवेदन करने का कष्ट देता हूँ । [illegible]
[illegible] निवासियों की कामना को निश्चित रूप से [illegible]
सेवा में स्वयं उपस्थित करूँगा [illegible] । वैसे तो सिद्धान्त को मौखिक
रूप से कोई न होने के कारण प्रायः प्रतिदिन वहाँ से [illegible]
होते हैं [illegible] लगा रहने का स्थान [illegible] है ।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

INDIA

POST CARD

WRITING SPACE

ADDRESS ONLY

HALF ANNA

AJMER DELY.

NALDAUR BIJNOR

(54)

Sj. D. S. "Pathik"

Editor

The "Tarun Rajasthan"

~~Ajmer~~ Ajmer

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ता. ९-९-३९

55

अजमेर

श्रीमान मैनेजर साहब

राजस्थान संदेश

आज मै आपकी सेवा में यह १५ दिन का नोटिस पेश करता हूं। जो ठेके में काम करे उसको १५ दिन का नोटिस देना नहीं पड़ता परन्तु आपके ऑफिस के नियमो के अनुसार देना पड़ता है। ~~[illegible]~~ १५ दिन का नोटिस मंजूर फरमाया जावे। आज के १५ वें दिन मेरा चुकता हिसाब साफ कर देने की कृपा करें।

आपका 67

मोहनसिंह

Forwarded

9-9-39 [signature]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ता. २३-९-२९

156

श्रीमान पाठक जी महाराज साहब

बंदे

मैं आपको जो नोटिस दिया था
वह नोटिस आज समाप्त हो गया
है सो आज मेरा हिसाब ५ बजे
मिल जाना चाहिए मैं अब एक दम
नहीं मैं आपको यह फिर लिख
रहा हूं। सो आप कृपया
करके हिसाब देने की कृपा करें

आपका मोहनसिंह

69

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

॥श्री॥ मु॰ उदयपुर

आश्विन कृष्णा १

सेवामें।

श्रीमान् मान्यवर ठाकुर साहब श्री [illegible] सिंहजी,

कुछ दिनों पहले मैं आपकी सेवामें हाजिर होकर आपके पास रहने वास्ते प्रार्थना की थी, और आपने भी रखने के वास्ते फरमाया था, जो आप भूले न होंगे!

मैं अभी तक बिजोलिया नहीं जाकर उदयपुर में ही हूं, और न अब बिजोलियां जाऊंगा; क्योंकि बिजोलियां से सूचना मिल चुकी कि मेरी जगह दूसरा मुकर्रर हो चुका, जिससे बिजोलियां भी आपके पास आने की इत्तला दे दी है; अब यहां से आश्विन कृष्णा ५ को रवाना होकर

सेवामें हाजिर होता रहीहूं . मुझको आशा
है आप कृपा कर अवश्य ही आगए देंगे
शेष कुशल

आपका स्नेहपात्र

पृथ्वीसिंह

(58)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

वन्दे मातरम्

(59)

Kashi Vidyapith
Benares Cantt.
[illegible] 10.28

Dear Pathakji,

Some months back my friend Prof. Chandrabhal Johri of Gujarat Vidyapith suggested me to assist you in your work as private Secretary. But for various reasons I could not comply with his request but in turn suggested my friend Pandit Vasudev Jha's name for the work. As a matter of fact Pandit Jha is more suitable for your work than myself, for, whereas I am a raw man yet in college he has finished his Vidyapith course specialising in State matters. The other reason for my suggesting Jhaji's name was besides his own simplicity in living etc., his love for your work, devotion towards you and consequently his eager desire to live with you which he characterised to be a fortune to him.

73

Anyway, in reply to Jhaji's letter you had accepted his offer and asked him to send some other information as to his

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Whether he wishes to join [illegible]
not but unfortunately he was ill
at that time and so could not himself
post the letter which was a reply to yours.
Thus the letter in question was lost without
his knowledge whatsoever. This resulted in
your appointing another man.

But I came to know that the
newly appointed man has left you.
You can now rightfully appoint Jhaji.
~~but [illegible]~~

I hope you will favour me with
a reply as to your intention.

Sarat Ch. [illegible]

J. 6 d A. 27

Mr. B. S. Pathik
C/o ~~m~~ Sardar Narmada Prasad Supt.
~~[illegible]~~ Rajasthan Seva ~~Sangha~~
140, Muthiganj
Allahabad ~~Ajmer~~

(60)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

इन्दौर
ता॰ २४-८-२८

श्री

(61)

श्रीमथीकजी साहब

प्रणाम

आपका पत्र ता २०-८-२८ का हमारे चीरंजीव संतोकचन्द के शादी के बारेमे आपके पास शीकायत आई उस का खुलासा करने बदल का पोहोंच।

संतोकचन्द ४० साल का हुवा होकर ४१ वा साल जारी है व यह बात हमने सगपन के संबंधमे जीतमल ... मुरणीया का पत्र लीखाथा उसमे भी लीख दी थी. उमर बतानी धोका देना यह मेरे नीयमो के खिलाफ है।

संतोकचंदको स्थुल शरीर का बताया यह बात गलत है. अलबत्ते शरीरमे दुबला व एकेहरे हाड का न होकर दोहरे हाड का व तयारे मगर सर हुकमचंदजीको आपने देखेंनाहे उन से दुबलाहे. ईसबक्त उसके शरीर को देखकर कोई यह ३०-३२ साल से ज्यादे उमर काहे एसा कोई नही कह सकता. १४-१५ मील पैदल फीर सकताहे घोडे पर २५-३० माईल जा सकताहे. व कीसी को शक होतो साथ फीर कर घोडे पे बेठके अजमानेतो मालुम हो जायगा की वह स्थुल व चलने फीरनेमे कैसे है.

ईनकी शादी होनेको २५ साल हुवे व जब ईन के कुटंबको १३ वा सालथा तब शादी हुई ईस परसे ईन की उम्र की २४ की होगी यह लीखना कहा तक सहीहे ईसे आपही तय करसकते है.

हालमे सगपन कीया उसकी जन्म पत्री म जन्म संवत १९६९ का लीखाहे इस परसे उसकी उमर १३ साल की बताई जाती है

75 A

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(62)

यह कहां तक सही है यह आप समझ सकते हैं. लड़कीवाला ऊमर कम बतला सकता है मगर ज्यादह कभी नही बतावेगा क्योंकी ज्यादह उमर बताने से लड़के वाले को कई शंकायें उत्पन्न होती है व सगपन होने मे रुकावट आती है यह आप जानते ही हैं.

हमको अपनी तरफ से खर्च करवाके जांच करवाने की जरूरत नही जो शिकायत करने वाले हों वे खर्च करें.

असलीयत इस मामले की यह है की हमने कोई बड़ी लड़की होतो सगाई करने के बारे मे लीखा न कीसी [illegible] कुवारी लड़की से संबन्ध न करते बीधवा से करना चाहीये ऐसी भी और यह मनीषा हम पुरी कर नही सकते इसलीये इश्तीहार नामी अखबारों मे कराना व समाचार छपवाने की कोशीस करना ऐसा वे साहब कर रहे है. दुसरी कोई बात नही है.

अगर संतोकचंद के लड़की है ऐसा लड़का होता व बुद्धिमान होती तो अलबत्ता शादी के लीये एतराज करना कीसी कदर ठीक होता. मगर ऐसा मोका नही बच्चा सात मास का हमारे कुटुंब व [illegible] के शरीर मे ताकत नही बीमार रहते है व संतोकचंद की तन्दुरुस्ती बहुत अच्छी बच्चे को जनने वाला नही शादी न करते कुंवारा रख के उनको बदचलन हो जाने का मोका देना जीससे बदनामी व घर के पैसे का नाश करवाना यह मै कैसे कर सकता हु व आप भी ऐसा करना पसंद करे ऐसा मेरा खयाल नही है. मैने यह हाल आप ने सज्जनता से मुझे पुछा इसलीये नीवेदन कीया है मगर अखबार मे छापने के हेतु से नही.

(62)

(67)

कोई कहेगा की बच्चों के लीये नोकर रखके पालन कराना

मगर यहां आदमी व औरते नोकर मीलने की कीतनी तकलीफ

है व जीसे नोकर रखे उस की कीतनी खुशामद को उमर दे

चलाना जावे इसलीये करना पड़ता है इस का इतमीनान आप

सुखलालजी तीरापजी भंडारी जो आप के परीचय के है उनसे पुछ

के करलेवे व मेरी संतोकचंद की तन्दुरस्ती का उनही से पुछे

या सर हुकमचंदजी वगेरा प्रतीस्टीत आदमीसे पुछे तो

असलीयत मालुम हो जायगी यहां हमारे तो बरतन वगैरा

का काम करने की बाई नोकर लापरवाह लोगों से आता है जो जीसके साथ आती है

हमने परीक्षा सगपन संतोकचंद का कीया वह तो छोटी

लड़कीसे कीया है नहीं तो इस वक्त काम उमर वालीसे करू

यह कैसे हो सकता है हमारे नीयम बीस सालके पेस्तर से

बाल वीवाह बीस साल के ऊपर शादी नहीं करना वीधवा

या कुवारी के साथ भोग नहीं करना की जीससे गर्भपात व

भ्रुणहत्या एक करते है व ऐसा करने वालों के साथ रोजगार

व्यवहार करने की तजवीज की है ऐसी हालत में मे अनुचीत तजवीज

करू यह हो नहीं सकता

आपने मुझसे अपनी तसल्ली करने के लीये हाल पुछा

इस बदल धन्यवाद देता हु. मेरे घर एक ही लड़का है व अपनी

की नौकरी की वजे से हमेशा कसबे में रहना पड़ता है व मै शहर

675 B

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(64) छोर्म के जा सकता नहीं व घरमे से मुझे अकेला के लड़के के पास जाके रहें पर भी हो नही सकता - व नोकर न मीलने से पमीक जी साहब संतोकचंद को कई बार हाथो से रोटी बनाना पड़ती है व कोई खराब मीलाता जेसा भोजन बनाके परसा वेसा मजबुरन खाना पड़ता है

आदरनीय तकलीफे ईस प्रकार की बड़े आदमी पर होने की हालतमे स्वभाव के कारण से हो रही है वो जो यहां भुगत रहे है वेही जानते है। लोको पर सखती करने का जमाना नही व संतोकचंद को एसे सीक्षण दीये की जीससे लोक उसे बरदास करे ऐसी हालतमे त्यागपत्र करने सीवाय दुसरा उपाय ही नही है

आपका

हीराचंद कोठारी

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

निभुरकी (67) ओ३म् बनेड़ा (मेवाड़)

9.6 / A 22 अधिक श्रावण शुक्ला १ ८५

सर्व शुभ गुण युक्त, देश हितैषी
माननीय श्री युत गुरुदेव के क-
मलवत् चरणों में अतियन्त
नम्रता पूर्वक सादर वन्देमातरम्।

एक मास से अधिक व्यतीत
होता है श्री मानजी का कर कमलां-
कित एक पत्र [illegible]गत हुआ पढ़ने
से हृदय को सब भांति प्रसन्नता प्रा
प्त हुई [illegible] अल्पावधि के पश्चात्
आज देश बन्धु के दर्शन हो हुए हैं।
उत्तर देने में त्रुटि इसलिय हुई
कि दौरे में चला गया था आया-
ही हूँ अतः अब उत्तर में केवल
इतना ही निवेदन करता हूँ कि मैं
१५) मासिक और भोजन का प्रब-
न्ध होने पर एक दम सेवा में उ
पस्थित हो सकता हूँ फिर जैसी
आज्ञा देंगे पालन करूंगा आशा

79

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(68)

हैं हम जैसे कूप मण्डूकों को सेवा में अपनायेंगे प्रत्युत्तर शीघ्र ही प्रदान कीजिये।

L.S.1 PC.8

आपकी आज्ञाकारी
शिष्य आ. कु. मनोहरसिंह
बन्हेड़ा (मेवाड़)

(68)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

18.12.28 om [illegible] (69)

श्रीमान् महात्मा जी [illegible]

, [illegible] तत्रास्तु (69)

सेवा में सविनय [illegible] है कि मैं [illegible]

[illegible] से बहुत दुःख से [illegible]

में, आपका [illegible] और, [illegible]

[illegible] था। और [illegible]

मैं [illegible] सब प्रबन्ध [illegible]

[illegible] नौकरी [illegible]

[illegible] है। और [illegible]

समय में [illegible]

[illegible] में हूं। [illegible]

हैं, और [illegible] रहे हैं।

, और [illegible]

इसलिये आप कृपा [illegible] मुझे [illegible]

दीजिये, और [illegible] पर

[illegible] दीजिये। [illegible] उत्तर

[illegible] है

आपका [illegible]

मैं [illegible] हूं और [illegible] भी

[illegible] है

(81)

POST CARD
WRITING SPACE
ADDRESS ONLY
ANASAGAR RD 5 DEC 28 AJMER
AJMER (BELY) 5 DEC 28 8.30 A.M
INDIA POSTAGE
Bijay Sinha Pathik
President
Rajasthan Seva Sangh
Ajmer
विजयसिंह पथिक प्रेसिडेन्ट
राजस्थान सेवा संघ
अजमेर

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

ॐ

(71)

कानपुर ता० ४५/७/३९

संचालक तरुण राजस्थान अजमेर

सविनय नमस्ते। पत्र देने का कारण यह है कि मैं राजस्थानी

बेकार हूं और राजस्थानी रियासतों में काम करना

चाहता हूं। इस लिये आप से निवेदन है कि कृपया

आप राजस्थान पत्र में सुचना निकाल देने का कष्ट करें।

मैं हिन्दी उर्दू अच्छी तरह जानता हूं व

गुजराती और मारवाड़ी भी काफी जानता हूं तथा

अंग्रेजी में साधारण योग्यता है। कृपा कर के

सुचना निकाला दीजियेगा

83

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

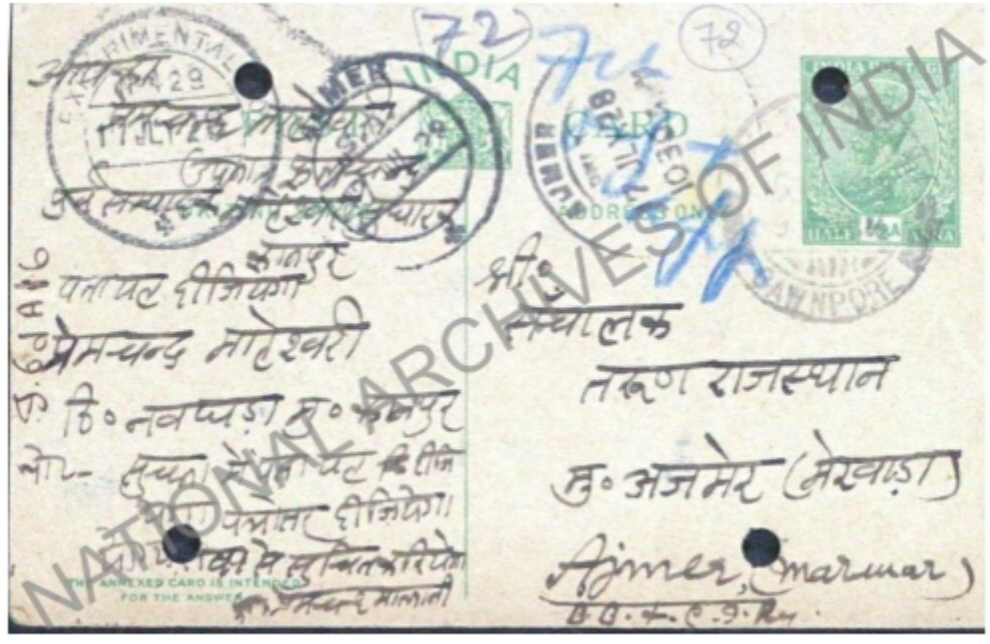

72

(72)

INDIA

POST CARD

ADDRESS ONLY

THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER

EXPERIMENTAL 11 JLY 29

AJMER

CAWNPORE

आसन्न

~~संचालक मिहोवदास~~

~~उपनाम इलीहाना~~

~~उर्फ संचालक श्रीअवस्थाय्~~

कानपुर

पता पर दीजियेगा

प्रेमचन्द माहेश्वरी

ठि० नवाबपुरा मु० कानपुर

नोट- सूचना से पता पर दीजि

पत्रोत्तर दीजियेगा।

मालती

श्री

संचालक

तरुण राजस्थान

मु० अजमेर (मेरवाड़ा)

Ajmer, (Marwar)

B.B. & C.I. Ry.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(73) (73)

मखदूम मुकर्रम जनाब मैनेजर साहब अखबार
राजस्थान संदेश अजमेर ज़ाद इनायतहू।

तसलीम। जनाब की खुदमत में लि० लखनऊ
मुद्दई बनाम पीर [illegible] मुद्दा: दावा ३००)
एक सम्मन मुद्दा: बगरज़ शाये होने फ़ीस ३॥)
बज़रिये अदालत १ 2/30 भेजा गया था। मगर
अफ़सोस है बावजूद यह पेशी २६ 2/30 हनोज़
कोई कापी अखबार [illegible] मज़कूर की बगरज़
शामिल मिसल अदालत होने के रवाना नहीं
फ़रमाई गई। चुनांचे आप की इस लापरवाही पर
मुद्दई ने साहब सिव० मिसल इसरे अखबार के
शाये कराने की ख्वाहिश ज़ाहिर की लिहाज़ा
बतामील हुक्म अर्ज़ होना गुज़ारिश है कि फ़ौरन
अखबार मुतअल्ला बगरज़ दिये जाने वापस मुद्दई
को रवाना फ़रमावें।

I. Ahmad

85

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

"RAJASTHAN SANDESH" Office

Ajmer(India)

D/..............1929.

Dear sir,

Your Firm has been introduced tomx us by our esteemed friend Sardar Diwan Singh Editor "RIYASAT"(of Delhi)in whose Journal you are a permanent Advertiser. And we are glad to introduce ourselves,as one conducting a most influential Vernacular Journal Edited by the only Political leader of the Province,and therefore most Popular and respected Organ of all the sections of the population from Princes to Peasants. We are furthre glad to inform you that we are going to bring out a Special number of our Journal at the end of December1929. It will be distributed in 20.000 Twenty Thousadnd Bound copies and will contain Articles from all the eminent writers of India, Germany, Africa,and England,including some of the leading members in the Labour cabinate. So if you think it fit you can avail of this opportunityalso,by sending us advance by Air mail and reserving your space by wire,as the time at our disposalis too short to allow any discussion on the subject by post it is due to this reason that we are sending our final rates to you stonce. We are sorry youx could be introduced to us only last week when our xxxxxxxx Manager paid a visit to Delhi in connectionwith the said Special number.

We are herewith enclosingour Tarrif schedule.But this contains our general advertising rates. To you we will allow the same commission which is allowed by"RIYASAT" and 3 more for the first year in lieu of our new acquaintance. Inthe same way we will accept all the Advertisements through you on the same rates on which they are accepted by "RIYASAT", though being in the language of the general populace, our Journal pervadesa wider range. The rates of advertisements for special number four times more than the ordinary ones but for the advertisements received through you we will charge only double. This concessionwill be acceeded to only the Permanent advertisers.

We regret that the old stock being exhausted,we are not despatching you the full instalment of our literature,as it is in the print.

Awaiting your esteemed order by wire.

Yours Faithfully

General manager

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

L. 1A

In reply please quote ....

(75)

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS DEPARTMENT.

(75)

FROM POSTMASTER-GENERAL, CENTRAL CIRCLE.

To The Manager, 'Rajasthan Sandesh' Office, Ajmer.

No. N 13-76/7 dated at Nagpur the 3rd January 193[illegible]

SUBJECT.

Sir,

With reference to your letter dated the 28th Ultimo I have the honor to say that you should in future post copies of the 'Rajasthan Sandesh' newspaper bearing registered No N-432 at the window of the Kaisarganj Sub post Office instead of the Ajmer Head post Office.

I have Etc

[signature]

for POSTMASTER-GENERAL, CENTRAL CIRCLE.

89

Karim Bux Bros., Printers, Calcutta—873 (D-52)—18-10-28—50,000 Bks.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(76)

J C S 015

(76)

S. F.
Progs.—26.

POST OFFICE.

No. F68/1/28

FROM

Rai Sahib Kishendial Singh,
THE SUPERINTENDENT, of Post Offices,

Lower Rajputana DIVISION.

To

B.S.Pathik Esquire,

Number of enclosures

President & Trustee,Rajasthan Seva Sangha,Ajmer

Dated Ajmer the 16th November 1928.

SIR,

I have the honour to acknowledge the receipt of your letter dated 15.11.28. The matter is receiving my attention.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

K.D.Singh

Superintendent of Post Offices,
Lower Rajputana Division.

91

Karim Bux Bros.—Printers—Cal.—532—14-5-25—1,75,000.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Ms.—3. 8/1.11.28

S C S 0.12 (77)

(77)

POSTS & TELEGRAPHS.

From Inspector Postoffices Mandsaur Subdn

To Mr. B. S. Pathik Ajmere

No. 1310, dated Mandsaur 24-10- 1928

Sir, With reference to your complaint dated 18-6-28 and addressed to the Superintendent Postoffices Lower Rajputana Division Ajmere, I have the honour to request you to kindly let me know the source through which you came to know that the book packets in question had been delivered to the Local Police at Singoli (Gwalior State) by the Branch Postmaster Singoli.

I have etc
G. R. Deo

Inspector Postoffices
Mandsaur Subdn
Mandsaur (S.S.)

श्री० [illegible]

Karim Bux Bros.—Printers—Cal.—848 (E-17)—20-11-26—1,00,000 Bks.

93

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Office

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

22/10/1928

(78) 60502 (78)

To

Rai Sahib Kishandayal Singh
Supdt: of Post offices,
Lower Rajputana Division

office copy

Dear Sir,

In continuation of this office's correspondance and in reply to your letter No F-4/185/28 I beg to enclose herewith the attested copy of the receipt sent to me by you. I hope this will enable you in completing your enquiry as soon as possible.

Yours faithfully

95

President Rajasthan Seva Sangha
Ajmer

S. F.
Progs.—26.

Replied, receipt enclosed
21-10-28

(79)

POST OFFICE.

No. F4/85/28

बुलस्पाइन्सर्व...
...
SC-5014

(79)

FROM

Rai Sahib Kishendial Singh,
THE SUPERINTENDENT of Post Offices,

Lower Rajputana DIVISION.

To

B.S. Pathik Esquire,

Rajasthan Seva Sangh, Ajmer.

Number of enclosures

Dated Ajmer, the 8th October 1928.

SIR,

With reference to your letter No.1730/1928 dated 4.10.28, I have the honour to request you kindly to return the attested copy received by you to enable me to enquire further into the matter.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

K.D.Singh

Superintendent of Post Offices,
Lower Rajputana Division.

8.10.28.
M.L.Mital

97

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Karim Bux Bros.—Printers—Cal.—0202—1-5-24—3,87,500

S. F.
Cpt.—18.

4. 10. 28

(80)

SC 5013 (80)

FROM

THE SUPDT. OF POST OFFICES
LOWER RAJPUTANA-DN.

To

THE B. S. Pathik Esquire
Rajasthan Seva Sangh Ajmer

No. 4/85/28 dated Ajmer the 24th Aug 1928.

SIR,

In continuation of this office letter No. 4/85 dated 10th August 1928.

I have the honour to inform you that the registered R.L.

No. 32 dated 30.4. 1928 was delivered to the addressee under a clear receipt on the 3rd May 1928.

An attested copy of the addressee's receipt is enclosed.

I have the honour to be,

SIR,

Your most obedient servant,

K.B. Smith

SUPDT. OF POST OFFICES
LOWER RAJPUTANA-DN.

99

S. F.—18—

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

J.C.S.O.10

(81)

C. with office

(81)

Post Office,

GWALIOR STATE.

2410
14-8-28

FROM

THE POSTMASTER-GENERAL,
GWALIOR STATE.

To

Mr. B. S. Pathik
The All India States' Peoples' Conference
Ajmere

Dated Lashkar, ________ 191 .

SIR,

In reply to your No. x dated 18.6.28, I beg to inform you that your complaint will receive my early attention.

I have, &c.,

[signature] 1/8/28
for Postmaster-General,
Gwalior State.

10

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

L. IA.

In reply please quote ....

(82)

POSTS AND TELEGRAPHS.

12-8-28

J. C. S. O. 8 (82)

FROM

SUPDT. OF POST OFFICES
LOWER RAJPUTANA DN.

To B. S. Pathik Esq
Rajasthan Sewa Sangh

No. I4/85/28 dated at AJMER the 15th ~~april~~ August 28

SUBJECT.

Sir,

In continuation of my letter No. I4/85/28 d/ 28-7-28 I have the honour to say that Anasagar (Aj) Regd letter no 63 d/ 14-6-28 was delivered to the addressee on 19-6-28. As regards Regd letter no 320 / 30-4-28, enquiries are being made to find out its disposal & the result will be communicated in due course.

I have the honour to be
Sir,
Your most obedient Servant

K. D. Sukul

SUPDT. OF POST OFFICES,
LOWER RAJPUTANA-DN.

103

Kasim Bux Bros.—Printers—Cal.—309—18-3-25—25,000 Bks.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Ge-So. 29

(83)

L. IA.

In reply please quote ....

POSTS AND TELEGRAPHS.

(83)

FROM The Postmaster Ajmer

To B. S. Raddick Esq
Rajasthan Publishing House
Ajmer

No. C/25 dated at Ajmer the 26. 6. 29.

SUBJECT.

Sir,

In acknowledging the receipt of your complaint dated 25th instand I have the honor to express my regret at the inconvenience & trouble you have been put to in regard to the posting of your paper which I was not aware of. I am glad you brought the matter to my notice & shall certainly take immediate action to put a stop to such conduct on the part of the staff of my office, & I trust you will have no further cause for complaint. In future should your man have any trouble please instruct him to ask to see me personally.

I have made enquiries but the clerks deny having refused your man under the circumstances I should be obliged if you will kindly send the man to me personally in order that I may go further with the matter & deal with the clerk concerned. He will find me in office between the hours 6 a.m to 10.30 am & 4 P.m to 7 P.m. Thanking you & with apologies for the inconvenience & trouble you have been put to.

I have the

H. M. Mitchell
P.M.

Karim Bux Bros., Printers, Calcutta—274 (D-8)—28-5-28—20,000 Bks.

105

JCSO 27

(84)

L. 1A.

In reply please quote ....

POSTS AND TELEGRAPHS.

(84)

FROM The Postmaster Ajmer

To B. S. Pathik Esq.
Rajasthan Publishing House
Ajmer

No. C/2 dated at Ajmer the 26-6-29

SUBJECT.

Sir

I am in receipt of your letter & thank you very much for having sent the boy to me I have been able to thresh out the matter which is as follows:

It appears that on the first occasion the boy came on Sunday, this being a Holiday there are no clerks on duty. The mail is closed at 11 a.m & kept ready for despatch at 4.30. which is correct. If you are despatching any papers on a Sunday or Holiday kindly arrange so that they may be brought to the P.O before 11 a m, this will solve the trouble.

On the second occasion the boy did come at 1.30 P.M as stated but as the Mail & Delivery clerks are off duty & do not return till 4 P.M the boy was asked to bring the papers again at 4 P.m. This is in a way correct but in my opinion the boy might have been asked to wait instead of being sent back all that way & made to do a second trip. I am warning the Clerks & instructing them for the future & trust there will be no further trouble.

I have etc

[illegible] yours

107

Karim Bux Bros., Printers, Calcutta—274 (D-8)—28-5-28—20,000 Bks.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(85)

JCS.0.29

(85)

Police (192) Department.

FROM :

C.P. Luck Esquire, I.P.S.,
~~THE~~ SUPERINTENDENT OF POLICE,
Ajmer-Merwara,

To

Mr. B.S. Pathik,
Editor Rajasthan Sandesh
Office, Ajmer.

Ajmer,
The 12-6-1929.

No. 4312

Dear Sir,

With reference to your letter dated 10th June 1929 regarding certain enquiries into the 2 cases mentioned there-in I write to inform you that both the cases are non-cognizable. If a definite written complaint giving the names of parties etc. is sent to the Police they will be put up before me and the orders of a Court will be taken if necessary. Further than this the police are unable to go at present.

Yours faithfully,

C.P. Luck

Superintendent of Police
Ajmer-Merwara, Ajmer.

109

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

9e505

S. F.
Progs.—26.

POST OFFICE.

(86)

(86)

No. F4/85/28

FROM

Rai Sahib Kishendial Singh,
The SUPERINTENDENT, of Post Offices,

Lower Rajputana DIVISION.

To

B.S.Pathik Esq.,

Number of enclosures

President,Rajasthan,Sewa Sangh,Ajmer.

Dated Ajmer the 24th July 1928,

SIR,

I have the honour to say that your letter dated 18.6.28 has been transferred for disposal to the Postmaster General,Gwalior State,Lashkar. All further communications on this subject should be addressed to that officer.

I have thehonour to be

Sir,

Your most obedient servant,

K.D.Singh

23.7.28.
M.L.Mital

Superintendent of Post Offices,
Lower Rajputana Division.

111

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Karim Bux Bros.—Printers—Cal.—0202—1-5-24—3,87,500.

S. F.
Progs.—26.

Correspondence with State officials?

(87)

J.C.50.9 (87)

POST OFFICE.

No. F4/85/28

FROM

Rai Sahib Kishendial Singh,
~~THE~~ SUPERINTENDENT, of Post Offices,

Lower Rajputana DIVISION.

To

B.S.Pathik Esq.,

President Rajasthan Sewa Sangrah Ajmer.

Number of enclosures

Dated Ajmer, the 28th July 1928.

SIR,

In continuation of my letter of even number dated 6.7.28, I have the honour to say that the ~~town~~ Town Inspector who was deputed by to personally see you reports that you could not furnish proofs in support of your allegations. As for the non-delivery of 2 registered letters mentioned orally by you to the Town Inspector the enquiries are being made and result will be intimated to you in due course.

I have thehonour to be,
Sir,
Your most obedient servant,

K.D. Singh

27.7.28.
M.L.Mital

Superintendent of Post Offices,
Ch. Lower Rajputana Division.

113

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Karim Bux Bros. ...—0202—1-5-24—3,87,500.

J@S.O.4

(83)

L. IA.

In reply please quote ....

POSTS AND TELEGRAPHS.

(88)

FROM The Deputy Superintendent,

I/C Govt. Tel. Office, Ajmer.

To Mr. B.S. Pathik,

Ajmer.

File C.A. 18.7.28

No. C-16 dated at Ajmer The 13th July 1928

SUBJECT.

Sir,

With reference to your complaint Dated the 6th July 1928, I have the honour to request you will please intimate me the Nos and dates of the bearing Press messages as noted on the telegram receipts granted by this office as to enable me to trace their transmission as the original messages have since been posted to Telegraph Check Office, Calcutta.

I have etc.

E. Game

Deputy Superintendent,

I/C Govt. Tel. Office, Ajmer.

115

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

9CS.06

L. IA.

In reply please quote ....

POSTS AND TELEGRAPHS.

(89)

(89)

FROM The Deputy Superintendent,
I/C Govt. Tel. Office, Ajmer.

To Mr. B.S. Pathik,
Ajmer.

No. C-16 dated at Ajmer the 20th July 1928

SUBJECT.

Sir,

With reference to your letter No. Nil Dated the 18th July 1928, I have the honour to draw your attention to article 47 (2) and (3) of the Post and Telegraph Guide February 1928 edition according to which the telegram receipt and a written statement from the addressee that the message was not received by him, should be accompanied by the complaint.

I have etc.

E. [signature]

Deputy Superintendent,
I/C Govt. Tel. Office, Ajmer.

117.

Karim Bux Bros.—Printers—Cal.—1248 (D-29)—8-2-27—20,000 Bks.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(90) (90)

मिरजावदा
ता० ३।८।५२

श्रीमान

श्रद्धेयवर

इससे पहिले एक लिफाफा ता० १७/७/५२ को प्रायवेट में और तारीख २६/७/५२ को कार्यालय के सम्बन्ध में भेजा सो मिला होगा। दूसरे का कारण यह कि पहिले को मैं स्वयं डाक में डालने नहीं गया दूसरे के साथ भेजा दूसरे आजकल की गड़बड़ी से [illegible] बना लेता है वह ऐसी अवस्था में उनकी [illegible] आने से आपके पास आता है।

पहिले भी लिखा था। बीसोदिया वाले [illegible] और कुंवर भीमसिंहजी मिल कर [illegible] सब बातें निश्चय करली है अब आपके पधारने पर प्रभु कृपा से सब ठीक होगा।

कुंवर भीमसिंह अपना निजका प्रेस लेने का इरादा करते हैं इसीलिये वे आपको पत्र भी लिखेंगे मुझे कहा [illegible] और मैं भी छपाई का काम जितना अच्छा आता है प्रेस मंगवा कर [illegible] [illegible] दे दिया जावे, हो सका तो आपके पधारने पर भी ले ली जायगा।

जमीन के सम्बन्ध में पहिले बता चुके हैं सो [illegible] पाते हैं वह ५० रु० एकड़ प्रति वर्ष के हिसाब से और कुछ ५ बीघा जमीन की [illegible] हो गई कुछ बाकी है [illegible]

बन्धुवर [illegible] जी व श्रीमती [illegible] को सादर वन्दे। शेष कुशल।

आपका
[signature]

119

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(91) 3/[illegible]/28 (91)

प्रिय महोदय

आपने जो मेरे प्रश्नों के जवाब भेजे
उनके लिये मैं आपका अनुगृहीत हूं
आशा है यदि और कुछ कागजी बात मालूम
हो तो उनकी भी सूचना आप देते रहियेगा — इत्यलम्

प्रिय महोदय सविनय

आपका गांधी नामवाला लेख भी
उसका उत्तर अभी तक प्राप्त नहीं हुआ
हिन्दुस्थान टाइम्स के
जल्दी लिखने की कृपा करें।

121

ADDITIONAL SPACE FOR STAMPS.

The ACCURACY of telegrams is not guaranteed; the Sender and Receiver must accept ALL RISKS arising from non-delivery, errors or delays. Complaints respecting telegrams and claims for refund involving complaints against the service should be addressed to the *Director-General of Posts and Telegraphs, Traffic Branch, Calcutta*; claims for refund respecting telegrams which do not involve complaints against the service should be addressed to the *Deputy Accountant-General, Telegraph Check Office, Calcutta*. Claims for refund or complaints respecting telegrams should be made within two months from the date of the telegram. The receipt granted for the telegram should be enclosed with the reference. In addresses consisting of a name prefixed to a Registered or Abbreviated address, or when a telegram is addressed to one person at the house of another whose name is also given, the words "Care of" or the symbol C/o should be inserted after the name of the addressee. There is always a risk of a telegram not being delivered if a full and definite address is not given in the first instance.

Lal Chand & Sons—4429—19-2-21—50,000 Bks. (Edn. V).

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

6th July 28

To,

(93) (92) 6/7/28

The Superintendent,

Posts and Telegraphs,

Ajmer.

Sir,

In continuation of our letter Datedthe 29th June, we regret to say that so far we have received no reply to our complaints.

Will you now kindly look into the matter and inform us about the result of your enquiries.

Yours Faithfully,

123

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

To,

The Superintendent of Telegraphs,

(93)

6/7/28

(94)

Ajmer.

Dear Sir,

We had despatched two bearing telegrams addressed to Frepress Bombay, Madras, Calcutta,----- Lahore, under the signature of Mr R.N. Chowdhry, between 15th and 20th Ultimo, both at one and the same time.

We are now informed that the telegrams ---- mentioned above failed to reach their destination.

Will you kindly immediately enquire into the matter and let me know its result.

Thanking you in anticipation,

Yours Faithfully,

125

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(95) (94) 18/6/28

The Deputy Superintendent,

In/Charge Govt. Telegraph Office,

Ajmer.

Sir,

With reference to your letter Dated the 5th July 1928 I would like to say that it is rather difficult for me to intimate the Nos. and dates of the bearing Press messages as receipts of such messages are not usually kept. But I do not think it is in-evitable as there is no other correspondent of the Free Press who can send such bearing telegrams from Ajmer and so you can easily trace their transmission between the dates given in my letter.

Yours Truly,

127

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(99) 9/CSO 41 (99)

مگر یہ خواہش سب کے دلوں میں موجود ہے۔ اسکے علاوہ ایک
بات یہ بھی ہے کہ مسلمانوں کے مذہب کا اصول یہ ہے
کہ نہ تو مسلمان غلامی کی زندگی خود بسر کریں نہ کسی
اور قوم کو اپنا غلام بنائیں۔ اسلام نے غلامی کی مخالفت
کی ہے تو پھر یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ ہم ہندوستان کی
غلامی پسند کریں بلکہ مسلمانوں کی خواہش تو یہ ہے کہ
دنیا کا کوئی ملک کسی غیر قوم کا غلام نہ ہو
بہرحال اس گفتگو کے بعد میں سب سمجھ گیا ہوں کہ
وہ بھی تو یہ قسم رکھتے ہیں کہ ان کا اصل مقصد یہ ہے
جو کہ تو چاہتا ہے جو ہندوستان کے ایک بانی [illegible]
اصلاحات کے بعد ~~[illegible]~~
نوجوان لیڈر ہیں اور [illegible]
انکے علاوہ کانگریس لیڈروں کے ساتھ سے اصولوں سے
ملتا ہے ~~[illegible]~~ انہوں نے ملک
کے لیے بہت قربانیاں کی ہیں۔ انکو [illegible] تھے
اسلئے میری درخواست ہے کہ آپ [illegible] اور
وطنیوں سے نیک شروع کریں تو اچھا

—

135

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(101) (101)

Telegraphic Address:—
"HIMMAT,"
Gwalior

9 C 80-32

No. 103
26.7.29

FROM

The SECRETARY FOR RAILWAYS
to the Government of His Highness the Maharaja Scindia
in the Department of Trade, Customs and Excise.

To

B. S. Pathik, Esqr.,

Editor,

The "Rajasthan Sandesh", Ajmer.

Dated Gwalior, 26th July 1929.

Dear Sir,

With reference to your representation dated the 2nd June, 1929, addressed to Her Highness the Maharani Regent, Gwalior, regarding non-payment of two money orders remitted by Abdulji Adamji Bohra of Jawad, I write to say that on receipt of the application dated the 4th April 1929, from Abdulji Adamji addressed to the Member for Trade, Customs & Excise, Gwalior Government, the Post Master General, Gwalior Government, was asked to report in the matter. The Post Master General informed that he had enquired in the matter from the Superintendent, Post Offices, Lower Rajputana Division, Ajmere, and had also informed the remitter of this.

From the above you will see that your allegation contained in para 3 of your representation referred to above, is absolutely baseless, and I wonder how you could make such groundless allegation without first obtaining reliable information.

You are doubtless aware that in matters of such nature enquiries are absolutely necessary and the consequent delay is unavoidable.

In this particular case the Post Master General Gwalior Government, having made enquiries from the Superintendent, Post Offices, Lower Rajputana Division, Ajmere, Deputy Accountant General, Post & Telegraph, Nagpur, and the Inspector, Post Offices of the State, now writes to say that at the request of the remitter the amount of the money order

137

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

has been paid back to him on the 13 th instant and a receipt obtained for the same.

(102)

Yours truly,

26/2/29

Secretary,
For Railways.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

का वि. आर्थिक विभाग

S. F.
Progs.—26.

S. C. Soll (109)

(103)

POST OFFICE.

No. F4/85/28 Registered.

FROM

Rai Sahib Kishendial Singh,
~~THE~~ SUPERINTENDENT, of Post Offices,

Lower Rajputana Division.

To

B.S. Pathik Esquire,

Rajasthan Sewa Sangh, Ajmer.

Number of enclosures

Dated Ajmer, the 3rd November 1928

SIR,

With reference to your letter dated 22.10.28, I have the honour to return the attested copy of the addressee's receipt duly corrected.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

K. D. Singh

S.11.
N.L.M.

Superintendent of Post Offices,
Lower Rajputana Division.

139

Karim Bux Bros.—Printers—Cal.—0202—1-3-24—3,87,500.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(101) (101)

Telegraphic Address:—
"HIMMAT,"
Gwalior

9 C80-32

No. 103
26.7.29

FROM

The SECRETARY FOR RAILWAYS
to the Government of His Highness the Maharaja Scindia
in the Department of Trade, Customs and Excise.

To

B. S. Pathik, Esqr.,
Editor,
The "Rajasthan Sandesh", Ajmer.

Dated Gwalior, 26th July 1929.

Dear Sir,

With reference to your representation dated the 2 nd June, 1929, addressed to Her Highness the Maharani Regent, Gwalior, regarding non-payment of two money orders remitted by Abdulji Adamji Bohra of Jawad, I write to say that on receipt of the application dated the 4 th April 1929, from Abdulji Adamji addressed to the Member for Trade, Customs & Excise, Gwalior Government, the Post Master General, Gwalior Government, was asked to report in the matter. The Post Master General informed that he had enquired in the matter from the Superintendent, Post Offices, Lower Rajputana Division Ajmere, and had also informed the remitter of this.

From the above you will see that your allegation contained in para 3 of your representation referred to above , is absolutely baseless, and I wonder how you could make such groundless allegation without first obtaining reliable information.

You are doubtless aware that in matters of such nature enquiries are absolutely necessary and the consequent delay is unavoidable.

In this particular case the Post Master General Gwalior Government, having made enquiries from the Superintendent, Post Offices, Lower Rajputana Division, Ajmere, Deputy Accountant General, Post & Telegraph , Nagpur, and the Inspector, Post Offices of the State, now writes to say that at the request of the remitter the amount of the money order

137

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

has been paid back to him on the 13 th instant and a receipt obtained for the same.

(108)

Yours truly,

(102)

Sd/- 26/2/29

Secretary,
For Railways.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

R. & P.-4.

(104) (193)

Acknowledgment.

(To be returned to office of posting for delivery to sender.)

RECEIVED a registered* L[illegible] No. 32 D/30/4/28

addressed to (name)

† Insured for Rs.

† Weighing (*in words*) tolas

Signature of addressee S.L. Ramdaiya ~~S.L. Ramdaiya~~

Date of delivery 3/5/28 [illegible]

* Write here "letter," "post-card," "packet," or "parcel," as the case may be, preceded by the word "insured" if the article is insured.

† To be filled up only in the case of insured articles, and to be scored out in the case of other articles.

[illegible] Printers—Cal.—0510—7-6-24—65,00,000.

141

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(104)

(105)

On Postal Service.

To

Sender's name and address. Attested copy / Sent here [illegible] / [illegible] Morar / 10/8/28

Name-stamp of office of posting. GWALIOR STATE MORAR

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(106) (105)

(२) तुम्हें जेल में डाला जाये तो समझ लो, वह तेरे ही भले के लिए है।

(३) जेल में पाखाना भी साफ करना पड़ता है तो समझ कि देश सेवा कर रहा है।

(४) सब फासिस्ट तेरे भाई हैं (सब मनुष्य नहीं। सं.)
क्यों कि वह तेरे साथ हैं और तेरी ही भांति मत रखते हैं।

(५) तुम्हें बन्दूक और तलवार इसलिए नहीं दिये गये हैं कि तू
उन से [illegible] लगाते है, बल्कि इस कारण कि तू [illegible] युद्ध की तयारी कर।

(६) कभी मत कहना कि तुम्हें कम वेतन मिलता है; क्यों कि यदि
दूर दृष्टि से देखा जाय तो तू स्वयं [illegible] को वेतन देता है।
तूने ही तो सरकार का निर्वाचन किया है और तू उसी की सेवा
के लिए सैनिक वर्दी पहनता है।

(७) सैनिक शासन का प्राण अंध आज्ञा-पालन है

(८) मुसोलिनी जो कहता है वह ठीक है।

(९) सैनिक आज्ञा का उल्लंघन करने का कोई प्रायश्चित
नहीं है।

(१०) हे भगवन! तूने मुसोलिनी को चिरंजीवी कर।
यह है इटली की विश्व-मङ्गलकारी राष्ट्रीयता, जिस में तूने
मुसोलिनी देवता बना दिये गये हैं। फासिस्ट उन्हें
देशभक्ति के नाम पर — बाल वाक्यं प्रमाणम् का प्रचार कर
जनता को अन्धविश्वासी बनाते अपना धर्म समझ रहे हैं
और फिर से 'महायुद्ध' का आवाहन करने में सारी शक्ति
लगा रहे हैं।

143

(107) (106)

कुकुरमुत्ता

('निराला')

एक थे नव्वाब,
फ़ारस से मँगाये थे गुलाब,
बड़ी बाड़ी में लगाये,
देशी पौधे भी ~~[illegible]~~ उगाये
रखे माली कई नौकर,
गजनवी महमूद का-सा बाग मनहर
लग रहा था,
एक सपना जग रहा था
साँस के तहजीब की
गोद में तरतीब की।
क्यारियाँ सुन्दर बनी
चमन में फैली घनी;
फूलों के पौधे वहाँ
लग रहे थे खुशनुमा;
बेला, गुलशब्बो, चमेली, कामिनी,
जुही, नरगिस, रातरानी, कमलिनी,
और कितने फूल, ~~[illegible]~~ फव्वारे कई,
रंग अनेकों - सुर्ख, धानी, चम्पई,
आसमानी, ~~[illegible]~~ सब्ज, फीरोजी, सफेद,
जर्द बादामी बसन्ती सभी भेद।
फलों के भी पेड़ थे,
आम, लीची, सन्तरे और फालसे।
चटकतीं कलियाँ, निकलती मृदुल गन्ध,
गले लग हवा चलती मन्द मन्द,
चहकते बुलबुल मचलतीं टहनियाँ,
बाग चिड़ियों का बना था आशियाँ।

साफ राहें, सरो दोनों ओर,
दूर तक फैला हुआ सब छोर,
बीच में आरामगाह
दे रहा था बड़प्पन की थाह।
कहीं झरने, कहीं छोटी सी पहाड़ी,
कहीं सुथरा चमन, नकली कहीं झाड़ी।
आया मौसिम, खिला फारस का गुलाब,
बाग पर उसका जमा था रोबदाब;
वहीं गन्दे में उगा देता हुआ ~~[illegible]~~ बुत्ता
पहाड़ी से उठे सर ऐंठकर बोला कुकुरमुत्ता -
'अबे सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबू रंगोआब,
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट,
डाल पर इतरा रहा, कैपिटलिस्ट,
बनाया है कितनों को तूने गुलाम,
माली कर रक्खा, सहाया जाड़ा-घाम;
हाथ जिसके तू लगा,
पैर सर पर रखकर वो पीछे को भागा,
औरत की जानिब मैदान यह छोड़,
तबेले को टट्टू जैसे तोड़;
शाहों, राजों, अमीरों का रहा प्यारा,
इसलिये साधारणों से रहा न्यारा;
वरना क्या हस्ती है तेरी, पोच तू
काँटों से ही है भरा, यह सोच तू
कली जो चटकी अभी
सूखकर काँटा हुई होती कभी,

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

प्यार किया कब मैंने किसको स्वयं नहीं यह जाना,
उलझा रहा अलख सा अपने में न उसे पहचाना

आस्था-भरा शुभ्र न पूछो है विश्व निष्फल अज्ञानी,
प्रखर अनिर्मित महाविच्छेद की जलती निशानी.
ले प्रलय सी आकांक्षा विपुल अवसाद योवन
फिर रहा अतृप्त जीवन लाख न पाई तुम अचेतन।

यह अपरिचित बालक किरण से जागृत निशानी,
बस न पूछो झुकती कैसी अजब घनघोर पानी।

मैं मरती का अविवेक लिये फिरता हूँ
पर आह! उन्मत विवेक लिये फिरता हूँ

अब विद्रोह सुलगाता पानी, कौन सकेगा इसको रोक।
मर जुगा मैं इन लपटों से, बेहूदों का यह मधुलोक।।

बाँध दे लहरें तरी से हम पथिक तूफान धानी
चिर विसर्जित स्वप्न संचित हम मरण वाहन पुजारी।

(मधुलिका)

उर में आग नयन में पानी होठों में मुस्कान सजा,
हम चले दुलकाते कलते, इतना दुख बल सा जा
अपनी तरणी फेंक प्रलय की लहरों में खुल खेले हम
आज भाग्य के उल्कापातों को हँस हँस कर झेले हम

अधर मधुर मुस्काता है शायद आत्मवंचक एक
जिसके प्राणों में विस्मृत है उर में सुख का अतिरेक
जिसका ले ले नाम युगों से साँस लुटाते तुम रोये
किन्तु न चेता जो निशि-निर्मम अब न क्षुधातुर तुम सोये,
आज आहें हो जाय वही अभिशाप अस्त गौरव पोषक.
और वही दुर्दान्त महाउन्मत्त हड्डियों का शोषक।

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

जिनकी आँखों में मदिरा मय मद में कामुकता उद्दाम
केवल पशुता से लथपथ जो थी आते नारी के जाम
किन्तु तनिक दिन ढलते ही बुझता देते थे शमन समान
तृषित सतृष्ण दृगों से लखते जो अघम औरों का काम

बढ़ते आते
हम देखो बढ़ते ही आते
उच्छृंखलता अन्धतमतम होती विद्रोही कर्मों की ज्वाला
हम घोर प्रगति अवरोध जहाँ आगत हो कितना भी काला
हम लक्ष्यों के चिर संस्थापक हम मानवता की भाग्य जगा
युग एक पलायन हो तो भी संग्राम हमारा प्रतिक्षण का।

हम घोर मानवता के सैनिक नवयुग के भावी के द्रष्टा
हम नहीं चेतना के पोषक सच्ची आजादी के स्रष्टा।

जब कोटि कोटि श्रमजीवी सब गावेंगे जनयुग का स्वागत
श्रमिकों कृषकों का एक [illegible] जब होगा जय जागृत भारत
तब तुम हमको पहचानोगे तुम "सब के सुख के" प्रतिद्वन्दी
पूँजीवादी मानवता की निष्ठुर आकृतियों के बन्दी।

— अंचल

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

का. वि. ... सिपाही

J. C. Soll (109)

S. P.
Progs.—26.

(103)

POST OFFICE.

No. F4/85/28 Registered.

FROM

Rai Sahib Kishendial Singh,
The SUPERINTENDENT, of Post Offices,

Lower Rajputana DIVISION.

To

B.S.Pathik Esquire,

Rajasthan Sewa Sangh, Ajmer.

Number of enclosures

Dated Ajmer, the 3rd November 1928.

SIR,

With reference to your letter dated 22.10.28, I have the honour to return the attested copy of the addressee's receipt duly corrected.

I have the honour to be,

Sir,

Your most obedient servant,

K. Singh

Superintendent of Post Offices,
Lower Rajputana Division.

R.11.
H.L.M.

139

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Karim Bux Bros.—Printers—Cal.—0202—1-5-24—3,87,500.

(110) (109A)

जय जय जय
(प्रयाण गीत)
सोहनलाल द्विवेदी

फूकों शंख ध्वजायें फहरें
चले कोटि सेना घन घहरें
मचे प्रलय!
बढ़ो अभय!
जय जय जय!

जननी के योधा सैनानी!
अमर तुम्हारी है कुर्बानी!
हे रणमय!
हे व्रणमय!

नित पद दलित के क्रंदन
अब न सहे जाते हैं बंधन
कारागारमय!
बढ़ो अभय!
जय जय जय!

बलि पथ बलि ले लो चलो निरंतर
हो गांवों में आज युगांतर
हे बलमय!
हे बलिमय!
बढ़ो अभय!

तोपें फटें, फटे भू अंबर
धरणी धँसे, धँसे धरणीधर
मृत्युंजय!
बढ़ो अभय।
जय जय जय।

अमर सत्य के आगे थरथर
कांपे त्रिभुवन कांपे विश्वंभर
वीर हृदय!
धीर हृदय!
बढ़ो अभय!
जय जय जय

बढ़ो प्रभंजन आँधी बन कर
चढ़ो दुर्गिरि गाँधी बनकर
उगो उदय!
बढ़ो अभय
जय जय जय

राजतंत्र के इस खंडहर पर
प्रजातंत्र के उठे नवशिखर
जनगण जय!
जनमत जय!
बढ़ो अभय!

जगे मातृमंदिर के अंदर
स्वतंत्रता के दीपक सुंदर
मंगलमय
बढ़ो अभय
जय जय जय

कोटि कोटि नित नतकर माथा,
जनगण गावें गौरव गाथा
तुम अक्षय
अमर अजय
भारत के मन प्राण हृदय।
जय जय जय
बढ़ो अभय

(111) (110)

गीत

(शम्भूनाथ सिंह 'रसिक')

जाऊँगा कहाँ मैं भाग!

जल रहा घर, जल रहा वन,
जल रहा है सृष्टि का तन,
हर जगह ही तो लगी है, यह घृणा की आग
जाऊँगा कहाँ मैं भाग!

सुन जिसे मानव सशंकित
और पशु-पंछी प्रकम्पित
हर जगह ही गूँजता है एक झंझा-राग!
जाऊँगा कहाँ मैं भाग!

महल और कुटीर मिलकर
धूल में होते बराबर,
हर जगह कोई क्षुधा भू की उठी है जाग!
जाऊँगा कहाँ मैं भाग!

किस तरह निज मन न खोलूँ?
और किससे आज बोलूँ!
हर जगह तो हँस रहा है प्रलय का अनुराग
जाऊँगा कहाँ मैं भाग!

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

हंसकुमार तिवारी

आग में घर

दुःख की ज्वाला रही है सिहर कातर
तन मलिन, जर्जर हृदय, विपद् भरे कुछ जीर्ण से घर
भारत का आकाश दुःख के बादलों से घोर काला
दीपमाला
हाय! इन हिय की गुफाओं में हँसेगा कब उजाला

भूखों का गान गाते हुए कवि कहता है

हम चिथड़ों में लिपटे रहते हैं भूखे
लोहू देकर पाते दो टुकड़े सूखे
हम कृश तन, दुर्बल मन, जीवन से ऊबे
दिल में ज्वाला आँखों में सागर डूबे।

बढ़े चलो बढ़े चलो

सोहनलाल द्विवेदी

न साथ एक शस्त्र हो,
न हाथ एक अस्त्र हो,
न अन्न, नीर, वस्त्र हो,
हटो नहीं,
डटो वहीं,
बढ़े चलो.
बढ़े चलो
रहे समक्ष हिमशिखर,
तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाये तन बिखर,
झुको नहीं,
रुको नहीं.
बढ़े चलो,
बढ़े चलो

घटा घिरी अटूट हो,
अधर में कालकूट हो,
वही अमृत का घूँट हो,
जिये चलो,
मरे चलो,
बढ़े चलो,
बढ़े चलो,
गगन उगलता आग हो,
छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो,
हटो नहीं
डटो वहीं
बढ़े चलो
बढ़े चलो
अशोक का लोल हो,
स्वतंत्रता का ढोल हो,
कड़ी युगों की खोल दो
डरो नहीं,
मरो नहीं
बढ़े चलो बढ़े चलो

(113) (112)

भगवतीचरण वर्मा

गगन पर घिरी मण्डलाकार ।
अवनि पर गिरी बूंद सम आज
गरज कर भरो रुद्र हुँकार
मही पर भरो प्रलय का साज ।
नष्ट भ्रष्ट आकार पड़े हो जलप्लावित संसार,
शब्द कर रहा हो पागल सी लहरों का अभिसार;
नीचे जल हो, ऊपर जल हो, हो जल के उद्गार,
बरसो बरसो अरे सघन घन महा प्रलय की धार ।

ईश्वर ने हम ही दीनों को,
धन-श्री का दास बनाया
शोषण की दमन चक्की में मनुजता को आज पिसाया
यदि ये प्राणों के हैं भक्षक, एक साथ क्यों ना खा जावें ?
तिल तिल करके आज खा रहे, क्यों जीवन से साथ खावें ?
क्यों सूली पर चढ़ा हाथों से, सुख से हम न मरने देवें ?
क्यों पीड़ा की चिर ज्वाला में, तिल तिल करके जीवन लेवें ?
दुखियों का जीवन लेना ही,
आज इन्होंने धर्म बनाया !
इनको ही प्रिय प्रतिशोध में,
विद्रोही का खड्ग बनाया !!
तुम देखो इन राज प्रासादों को, पहाड़ से दीख रहे हैं;
हमें जलाने इन के पत्थर, आज मन से सीख रहे हैं !
इस जग के मनुज मानव ने; इन महलों की सुरक्षित वायु !
आज हमारी ~~भरी जवानी~~ खोद दी; वही आयी है बलजोरा !
गिर मजूरों के कन्धे से; हमें जलाते हमें मिटाते !
आज हमारी मान जोत दी; आज तुम्हारा यह वैभव काला ।
जिनके जीवन के श्रम पर ही; ये प्रासाद बनाये जाते !
हे ईश्वर ! उन्हीं दीनों को; तड़पें यहां बताये जाते !
जीवन का जीवन ही लेकर; यहां प्राण धन मोल हो रहा !
देशों की पावन ~~भूमि~~ भूमि पर; आज आत्मा का खेल हो रहा !

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

सिसकता फूटता बनी है . [?]
आँसुओं से धुल जाती !
किससे कहें कौन सुनेगा ?
आह ! फटी आती है छाती !!

हम निर्धन भारतीयों को सुनते; मानो प्रिय वरदान मिल रहे;
सहते हैं बाहर तलुवे भी, मानो प्रिय फलदान मिल रहे
हमने जग के हित मरना ही, निज जीवन का ध्येय बनाया
पर जाने किसे दिन पर ही मृत्यु का विधान रचाया।

हे प्रियतम इस अखिल जग ने
जीवन का कर सत्यानाश कर।
निर्दय जग की करतूतों को,
हमें भुलाना होगा ही अब !!

उठो उठो सुग्रीव रूप में भारती भूकम्प कर डाले
झाड़ झाड़ झंखाड़ तोड़ कर, शासक युगों की श्रृंखलायें !
लूट लूट उन के वैभव को, जीवन के हम जाल उजाड़े;
शासकों को पटक, आज हम निर्धनता की छाती फाड़ें
दहल उठे जन की धनवानी भाग्य लाले पड़ जावें !
वैभव के सागर महानते, तिल-तिल करके अब जल जावें।
वैभव की चौड़ी छाती पर आज करें हम तांडव नर्तन
कूद कूद विप्लव रूप में करें वैभव का उड़ तन [?]
मैं बन जाऊँ आज भैरवी, वैभव का शोणित पी जाऊँ
वैभव की चमड़ी उधेड़ मैं नोच नोच कर चर्बी खाऊँ
इसी तरह नर्तन करके . हम
वैभव का अस्तित्व मिटावें !
निर्धनता की इस पीड़ा
धनवानों को जड़ से खावें

जग जीवन के महा पाप की, आदि सीढ़ी है बनी गुलामी
तोड़ शृंखला इस की प्रियतम ! बन जायें स्वतंत्र अनुगामी
देवी - स्वतंत्रता के उपासकों के आदर्शों को अपनायें
झांसी की रानी पद्मिनी की प्रतिमा को हम शीश झुकायें
आशा का अवलम्ब हृदय में
धर करके निज कार्य करें हम !
वैभव के इस अस्थिर जग में;
आजादी हित जाग पड़े हम !

(115) (114)

~~चलो~~ चलो चलो, प्रियतम ! इस जग से कहीं अलग जग जाय बसावें !
तव भिक्षाओं की भीषणता हित आकर नव कुटीर बसावें !!
निर्धनता अवश्य देवी हो पूंजीवाद का नाम न होवे ।
जहाँ पर हो केवल जनता ही शासक का कुछ धाम न होवे !!

होगा वही सत्य जगती तल
वही सत्य जीवन का होगा
निज दूसरे के हित मरना
सफल मानव जीवन होगा

उषा की स्वर्णिम अरुणाई, सुभग सुहाग लुटाती होगी
मृदुल मृदुल सौरभ कांति से मलयज [illegible] होगी
जहाँ निज अपने जीवन में नव नव नवल [illegible] बोलेगी
स्वर्ग सुन्दरी से स्वर लेकर निज [illegible] जीवन मधु रस घोलेगी

जहाँ स्नेह, मैत्री मृदु ;
प्रकृति नटी [illegible] आसन सुन्दर ।
अमर शांति की मृदुल गोद में
जहाँ चलेंगे हम सब सुन्दर

मृदुल हृदय की कोमल करुणा ; जहाँ बिखेरी अतिशय सरसी.
मुक्त [illegible] थी जीवन के ; जहाँ बहती रस मय सरसी
जहाँ हमारा, हे प्रियतम ! मधु मधुरिमा जीवन होगा
जहाँ मृदुल जलद पहिला हो ; मलयज चंचल दलता होगा

आत्म शांति-में चलें साथी हम ;
अमर शांति में फिर आवें !
जग जीवन का सत्य बतावें ;
दीपक से जल कर, बुझ जावें !!

लेखक
[illegible] 'प्रसाद'

अध्यापक प्रसाद

यह बड़ी है- इसका मर तक
महज़ मज़दूरी करता था
यह बड़ी है अपने तन का
यह पेट अन्न से भरता था
यह बड़ी है क्योंकि इसने
निज के मरतन को मुस्काया
सूरज की ज्वाला लपटों में
पिघलाई निज कंचन काया
भीषण शाहस के यंत्रों में
अपने अंगों को कटवाकर
इसने सांपों के पेट भरे
अपने अंगों को डसवा कर
यह बड़ी है क्योंकि इसने
गहरी रिश्वत को ठुकराया
यह बड़ी है क्योंकि इसने
भूखों पर सितम नहीं ढाया
यह बड़ी है क्योंकि इसने
अधिकारों का रण

(115) (116)

153

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

महाप्रयाण

[illegible]
बढ़ते आते
हम देखो बढ़ते ही आते
उज्ज्वलतर उज्ज्वलतम होती विद्रोही कर्मों की ज्वाला
हम घोर प्रगति अवरोधन जहाँ आगत हो कितना भी काला
हम न दृष्टों के किन्तु संस्थापक हम मानवता की राह सजग
युग एक पलायन होते भी संग्राम हमारा प्रति नव पग
हम शक्तिपुञ्ज हम हैं अनेक संघर्ष हमारा महा प्रबल
क्या बाधा हमारे जीवन की झंकोड़ियाँ हमारी गति चञ्चल
पथ की पाषाणी बाधायें चढ़ते पारद सी गलतीं
जब हम बनजारों की टोली जग के [illegible] सी चलती
बढ़ते आते
हम देखो बढ़ते ही आते
पहचान सकोगे तुम कैसे हम [illegible] के विश्वासी
हम किसी व्यवस्था के दुश्मन [illegible] नूतन युग के विश्वासी
हम घोर भावना के सैनिक [illegible] नव भावों के द्रष्टा
हम नई चेतना के [illegible] सच्ची आज़ादी के स्रष्टा
पहचान सकोगे तुम कैसे जड़ कायर अगति के भक्त
तुमसे तो ऐसा [illegible] प्रतिगामी मुद्रा ही संभव
जब कभी [illegible] होगी संस्कृति(?) होगा समाज वैषम्य रहित
यह [illegible] कहलाते वाली [illegible] शोषण धर्म रहित
तब [illegible] गद्दारी के [illegible] प्रतिनिधि तुम भी होगे हम को
विस्फारित आँखों से देखोगे 'कुढ़ के सुख' की मानस को
बढ़ते आते
हम देखो बढ़ते ही आते
यह कौन खड़ा संसार में हिन्द देश की आवाज़ लिये
यह कौन खड़ा विकल धर्म लिये निज तेज पुंज की लाज लिये
'इन्कलाब' 'जिन्दाबाद' चिल्लाकर रोकेगा यह कौन पुरातन राज
जिसकी राहों में ताकत [illegible] जो तूफानी विप्लव
तुम हिंसक हो हमने तो यह [illegible] से सीखा ही सीखा
हमको तो तिल तिल कर जलना ही जीवन का [illegible] दीखा
तुम स्वार्थ न छोड़ोगे अपना हैं स्वप्न हमारे भी निश्चित

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(118)

(117)

हम सभी हड्डी के ढाँचे पर अब जीवन से हैं पीड़ित
अपमानित होने की भी हद होती है भूखों मरने की
तन और आहत मन ले हमें भी होश नहीं लड़ मरने की
अंगारों के संघातों को अपनी छाती पर झेलते रहे
'जागो जीवित जागो एक रहो' हम तो जीवन से खेल रहे
बढ़ते आते
हम देखो बढ़ते ही आते

है दोस्त रही मंज़िल अपनी बस अंतिम धावा है बाकी
जब युग का मोड़ सफल होगा फिर तो अपना ~~[illegible]~~ जामा खाकी
जब कोटि-कोटि श्रमजीवी सुर गावेंगे नव युग का स्वागत
शोषितों कृषकों का एक वर्ग जब होगा अब जागृत भारत
तब तुम हमको पहचानोगे तुम सब के 'सुख' के प्रति भूखा
पूँजीवादी मानव राज की निष्ठुर आकृतियों के बीच
मानव को पशु फिर मूक बना तुम दानव बन शासन करते
तुम भी शोषण के मद बढ़ा जनता को चूस उदर भरते
तब तुम पहचानोगे हम को जो सब के गौरव दुख हर्ता
धधके आपद विप्लव के [illegible] दुर्जेय पहली आवाज़ करता

टूटी गर्दनें और बांहें जिन में सड़ती जीवन धारा
वे जीवित [illegible] / हिंसक निष्ठुरता की कारा
[illegible] नि:शंक स्नेह आग लिए उसके हाथों में धागे
टूटे [illegible] दिल पहले ही टूटे थे उसके टुकड़ों में मतवाले
हम आज लिये अंधी चिनगारी उर्मी भरते के ऊंची आशा
[illegible] की आगति ~~[illegible]~~ हाथों ने ~~[illegible]~~ कितने बढ़ आगे [illegible]
बढ़ते आते
हम देखो बढ़ते ही आते

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(118)

रोता पड़ता रहा पानी,
तू हमारी मेहरबानी
चाहिये तुमको सदा मेहमानी सा
जो बनाये [illegible]; ऐसी दिशा
महाकाल ने करे लोगों को, नहीं कोई किनारा
जहां अपना नहीं कोई भी सहारा;
ख्वाब में डूबा चमकता है सितारा,
पेट में ठंड पकड़े चूहे, जीवों पर [illegible] प्यारा,
देख मुझको, मैं बड़ा,
डर [illegible] और अंधा हूँ खड़ा;
और अपने से जगा मैं
बिना दाने का चुगा मैं,
[illegible] लेना नहीं लगता;
मेरा जीवन आग लगा,
तू है नकली मैं हूँ मौलिक,
तू है बच्चा, मैं हूँ [illegible];
तू रंगा और मैं धुला,
पानी मैं तू बुलबुला;
तूने दुनियां को बिगाड़ा
मैंने दबने से उभारा
तूने रोटी छीन ली जीवन का,
एक की है [illegible] मैंने, सुना?
काम [illegible] ही सधा है,
[illegible] मुझ से गया है।
[illegible] मेरी [illegible] खाता बना, ×
देखा। भारत का पढ़ी, कैसा रचा
सब जगह तू देख ले,
आज का फिर [illegible], [illegible] ले।
विष्णु का मैं ही सुदर्शन चक्र हूँ
काल दुनिया में पड़ा ज्यों, चक्र हूँ -
उलट दे, मैं ही जमाने की सफाई,
और भी लम्बी कहानी :-

(119)

सामने का तू मुझे देखा,
देख कैसा -
तीर से खींचा धनुष मैं राम का,
श्याम का -
पड़ा [illegible] हूँ [illegible] का,
सुबह का सूरज हूँ मैं ही,
चांद मैं ही शाम का।
[illegible] मैं [illegible],
[illegible] मैं [illegible] और [illegible]।
मैं ही डोरी से लगा [illegible]
सारी दुनियां [illegible];
मैं [illegible]।
[illegible],
हो [illegible],
[illegible] मैं चमकता,
[illegible] मेरा ही चमकता,
[illegible] हूँ मैं ही,
डुबाता मझधार मैं ही;
डूबने को मैं ही तारता,
पार मैं ही, मैं ही डूबा।
मैं उगल जल, बना डमरू;
[illegible], तब बना [illegible];
[illegible] होकर [illegible] निकला;
[illegible];
मैं पुरुष और मैं ही अबला,
मैं हिन्दू और मैं ही [illegible];
[illegible] का मैं ही सितार,
[illegible] का [illegible], [illegible] का [illegible]।
मैं ही [illegible], लिपि के मुझसे ही बने,
संस्कृत, फारसी, अरबी, ग्रीक, लैटिन के जने
मंत्र, गजलें, गीत। मुझसे हुए और,
जो रहे फिर मर रहे, फिर हो रहे [illegible]।
[illegible] मुझ से बना,
[illegible] मुझ से सजा,
[illegible],

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(119) (120)

इटली में इस समय प्रायः तीस लाख फासिस्ट स्वयंसैनिक हैं। हाल में उनकी नयी प्रार्थना तैयार की गयी है। पाठक उसी पर उनकी परदेश लुण्ठनकारी देशभक्ति का परिचय प्राप्त करें :—

हे परमात्मन् ! तू सब अग्नि शिखाओं का दीपक है। मेरे हृदय में भी इटली की भक्ति की शिखा प्रदीप्त कर।— मेरे ग्रंथों में सद्बुद्धिपूर्ण विचार और मेरी बंदूक में अपनी इच्छा (?) भर। (मुसोलिनी ने फासिस्ट नवयुवकों को अपने एक हाथ में पुस्तक और दूसरे में बंदूक लेकर फासिज्म का यह आदर्श बताया था। विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर इटली को बेहतर [illegible] के लिए युद्ध करो। सं.) स्वीकार कर, समुद्र तट के [illegible] स्थलों के बीच और लीबिया की तरफ जो भूमि रोम के आधीन था, मेरी तीखी निगाह रहे। (फासिस्ट सैनिकों को सिखाया जाता है कि इटली के पास के देश कभी रोम के आधीन थे, हमें उन्हें फिर से इटली में मिलाना होगा। सं.) हम अपनी मातृभूमि को अधिकाधिक विस्तृत करते जायें।— हे परमात्मन् ! डूचे (मुसोलिनी का लाड़ला नाम। सं.) के रूप में सदा और हमारी मृत्यु के समय भी इटली की रक्षा कर।

यह तो हुई दयानिधि भगवान् से प्रार्थना। अब पाठक फासिस्ट सैनिकों के लिए बने हुए दस आदेश सुनें। इन में सामरिक देशभक्ति के भीतर तंत्र का प्रताप झलक रहा है :—

(१) यह बात गांठ बांध लो कि फासिस्ट सदा सैनिक है। वह कभी फिर शान्तिपूर्वक विश्राम नहीं करता।

(122)

(123)

राजस्थान हिन्दी सम्मेलन

कार्यालय अजमेर,

पत्र सं०

ता०

To The District Magistrate
Bhadra (Bikaner) (1)
Ratangarh, (2) Chseveroon, (3)
Sujangarh, (4) Hanumangarh. (5)

(6)

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

پیش ہوئے ۱۹ رجولائی ۱۹۳۰ء (124)

(124)

جناب صدر صاحب ضلع کانگرس کمیٹی اجمیر

تسلیمات

چونکہ اجمیر ویونگ اینڈ ٹریڈنگ کمپنی لمیٹڈ کی دوکان
پر ولایتی سوت کی ریزنگی وغیرہ بک رہی تھی
اس غرض سے وہاں پکیٹنگ لگا دیا گیا۔
اس کے بعد ۲ مئی کو ایک چٹھی کمپنی ہذا کی معہ نقل معاہدہ
[illegible] ڈسٹرکٹ [illegible] کی موصول ہوئی
جو [illegible] شرائط [illegible] کمپنی کو اس کے خلاف پایا
بدیں وجہ وہاں پکیٹنگ جاری ہے۔
شرائط معاہدہ ہمراہ ہیں ملاحظہ ہو۔ چونکہ
کارخانہ ہذا نے عہد شکنی بلا شک کی ہے
اور ظاہر ہے [illegible] وقتاً فوقتاً معاہدہ
برات معاہدہ [illegible] رہنے کا [illegible] ولایتی
میرے خیال سے [illegible] کا مال ضبط [illegible]
اور [illegible] [illegible] کیا جاوے [illegible]
[illegible] وہاں پکیٹنگ نہ ہٹایا
جاوے۔ فقط [illegible] جاری رکھا
کہ [illegible] میں پیش کیا جاوے۔

آپ کا خیر خواہ

[illegible]

پکیٹنگ انچارج اجمیر

مورخہ ۱۲ رجون ۱۹۳۰ء

163

(125)

(125)

خدمت جناب ڈپٹی کمشنر صاحب ضلع [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

منجانب
ڈاکٹر ایس ایچ [illegible]
ممبر ورکنگ کمیٹی انچارج ضلع کانگریس کمیٹی [illegible]

[illegible]

165

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(126) (126)

[illegible]

[illegible]

(1) [illegible]

(2) [illegible]

(3) [illegible]

(4) [illegible]

(5) [illegible]

167

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(૬) [illegible] (127)

(127) [illegible]

[illegible]

(૭) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(૮) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(૯) [illegible]

[illegible]

૨૦-૦-૦ [illegible] ૨૦૦-૩-૦

[illegible]

[illegible]

(૧૦) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(128) (128)

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

169

[illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

134

(134)

COMMISSIONER AJMERE

Ajmer,

2nd January 1932.

Dear Mr. Pathik,

I have just received your letter explaining that you are prevented by urgent business from coming to see me today. To-morrow is Sunday , but if you can come at 2 O'clock on Monday afternoon, I shall be very glad to see you.

Yours truly,

E C Gibson

B. S. Pathik, Esqr.,
Rajasthan Publishing House, Ajmer.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

177

(135)

No. 19114 of 1931. (135)

Dated Ajmer, the 23 December 1931.

FROM

THE COMMISSIONER,

AJMER-MERWARA,

To

Mr. B. S. Pathik,

President, District Congress Committee,

Ajmer.

Dear Sir,

With reference to your letter dated the 22nd instant which I have just received I write to say that I shall be glad to see you at 2 p.m. on January 2nd. I regret that owing to the Christmas holidays I cannot arrange an interview before that day.

Yours truly,

E C Gibson

Commissioner, Ajmer-Merwara.

SB
23/12/31

S.D.M.23/12/31.

179

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

136

No. 4747 IV-48(2) of 1932.

136

Dated Ajmer, the 30 March 1932.

FROM

THE COMMISSIONER,

AJMER-MERWARA,

To

Mr. B. S. Pathik, Editor,

Rajasthan Sandesh, Ajmer.

Memorandum:

Reference:- Your letter dated the 14th March 1932 regarding the buildings previously occupied by the Provincial and District Congress Committees.

2. The request that the premises should be relinquished or that Government should pay rent for them can not be entertained.

E C Gibson

Commissioner, Ajmer-Merwara.

S.D.M.29/3/32.

29/3/32

181

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

143 (144) S.6dA9

੧ ੳ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ॥

—○:○:○—

ਨੰਬਰ ________ ਤ੍ਰੀਕ ____________ ੧੯੨ .

ਦਫ਼ਤ੍ਰ:-ਅਕਾਲੀ ਜੱਥਾ ਰਿਆਸਤ ਪਟਿਆਲਾ

ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ______________________

______________________ ਜੀ !

جناب پاٹھک صاحب۔ سکریٹری انڈین سٹیٹس پیپلز کانفرنس

بمبئی۔

تسلیم - جناب پر ریاستوں کی رعایا کے مظالم اچھی طرح روشن ہیں
کہ کس طرح خودمختار راجے اپنی عیش پرستی کے لئے
لوگوں کو تنگ کر رہے ہیں۔ بے جا ٹیکس لگائے جا رہے ہیں
کنواری لڑکیوں کی عصمت دری کی جا رہی ہے غرضیکہ
کوئی ایسا ظلم نہیں جو کہ روا نہ رکھا گیا ہو
کسی کی کوئی شنوائی نہیں ہوتی انصاف کی کوئی صورت
نہیں ہے - اس حالت زار پر نظر مارتے ہوئے
ہم نے ارادہ کیا ہے کہ پنجاب کی ریاستوں کو

191

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

145 S. 6. d A 8

੧ ਓ ਵਾਹਿਗੁਰੂ ਜੀ ਕੀ ਫਤਹਿ ॥

ਨੰਬਰ ________ ਤ੍ਰੀਕ ____________ ੧੯੨ .

ਦਫ਼ਤ੍ਰ:–ਅਕਾਲੀ ਜੱਥਾ ਰਿਆਸਤ ਪਟਿਆਲਾ

ਸ੍ਰੀ ਮਾਨ ______________________

______________________ ਜੀ !

ایک مضبوط تنظیم بندی میں منسلک کیا جاوے اسی
تمام ریاستوں کے برگزیدہ بندوں کو مانسہ دیوان پر جو کہ ۲، ۳ دلم
ساون مطابق ۱۶، ۱۷ جولائی 1929ء کو منعقد ہوگا
مدعو کیا گیا ہے۔ جناب کیونکہ ایسے نیک کاموں میں
خاص خط رکھتے ہیں اس لئے جناب کو یہ رقعہ بھیج کر
عرض کی جاتی ہے کہ اس دیوان پر ضرور پہنچیں دیگر بیچاری
ریختہ حالت کو سدھار کر مشکور فرماویں

نوٹ۔ مانسہ کی صرف سٹیشن ہے جو کہ دہلی جاکھل لائن
پر ہے۔ خواہ کتنا بھی کام بھی ہو ضرور چھوڑ کر درشن دیں۔

193

[illegible signature]

.... ਜਨਰਲ ਸਕੱਤ੍ਰ

ਅਕਾਲੀ ਜਥਾ ਰਿਆਸਤ ਪਟਿਆਲਾ

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(146)

استقبالیہ یونٹی کانفرنس

۱۹ جون ۳۳ء کو ایک جلسہ بصدارت مولانا حسرت موہانی صاحب ممبران [illegible] منعقد [illegible] تاریخ ۲۰، ۲۱، ۲۲ [illegible]

مسٹن روڈ کانپور) میں منعقد ہوا۔ جس میں یونٹی کانفرنس مجوزہ ۲۰ اکتوبر و [illegible]

(144)

بعد حسب ذیل حضرات استقبالیہ کا انتخاب عمل میں آیا۔

صدر استقبالیہ — مولانا حسرت صاحب موہانی

نائب صدر — شری رتن شکل صاحب

〃 گرو رگھوبر دیال صاحب

〃 — مولوی کریم علی صاحب

سکریٹری — اندر سنگھ صاحب

جوائنٹ سکریٹری — رام سنگھ صاحب ورما

اسسٹنٹ سکریٹری — [illegible] صاحب

〃 〃 سید ابو [illegible] صاحب

〃 〃 حکیم [illegible] صاحب

ممبران استقبالیہ — [illegible] صاحب [illegible]

رام لال صاحب پانڈے — پنڈت رام [illegible] صاحب [illegible] لال صاحب [illegible]

سید علی حسین صاحب [illegible] — ڈاکٹر [illegible] صاحب — پنڈت [illegible] صاحب — [illegible] صاحب

ڈاکٹر [illegible] صاحب [illegible] سنگھ صاحب — محمد ایوب انصاری رضوی — [illegible] صاحب

لالہ [illegible] صاحب — قاضی انعام اللہ [illegible] صاحب [illegible]

195

8.5.28

145

147

مہربان من — تسلیم بجا لاکر عرض

عنایت نامہ [illegible] موصول ہوا جس میں بہادر سنگھ سے [illegible] تعمیر کرانے کا لکھتے

تھیں اور اس نے یہ جواب [illegible] ہے جو تعمیر کرا دوں اور [illegible] سے

[illegible] میری [illegible] و بنگلہ سے جو [illegible] شروع کروں اب [illegible] تحریر کرا [illegible]

اور کیا [illegible] جس جگہ تمام شروع ہوا [illegible] آگے [illegible] تحریر [illegible] آپ نے اپنی

تمام [illegible] اس کی [illegible] ہے بلکہ [illegible] [illegible]

[illegible] آپ یہ تحریر بھیجی [illegible] آپ کی منشا ہے اور میں آپ کی [illegible]

[illegible] شاید تمام [illegible] اگر آپ کی منشا اور ارادہ ہو تو [illegible] تحریر [illegible]

اور [illegible] یا کم [illegible] ہے [illegible] ابھی تک کسی سے [illegible] ہے

اور نہ میں کسی [illegible] آج تک کسی [illegible] ہو [illegible] خود [illegible]

[illegible] بہادر سنگھ [illegible] کیا جاوے [illegible] حال [illegible] تحریر کیا جاوے

197

نہ واسطہ چیز ہونا چاہیئے ۔ مجھکو اپنی تمام کی بھی سخت ضرورت درپیش ہے ۔

اگر آپکی پاس سے یہ تمام ہو جائے تو بہت فائدہ ہو سکتا ہے اور کوئی دوسرا آپکی

مقابلہ میں اسطرح فائدہ حاصل نہیں کر سکتا ہے اسکو مجھکو زیادہ امید ہے

کہ [illegible] آدمی سے فائدہ ہو سکتا ہے اور سے نہیں ہو سکتا ۔ اور باقی حال

آئندہ [illegible] عرض کرونگا ۔ اور کوئی تازہ حال نہیں ہے اور اخبار تیہ اردو

میں بھی تحریر کرکے روانہ [illegible] کہ عالیجاہ المعلی لاٹ سے ہوتی رہے

اور دونی بھی سلام عرض کرتا ہے [illegible] آئندہ ارادہ ہے اگر کسی معاملہ

دیکھیں تو آپ فقط اور ہر ضروری بھی [illegible] ہے الملتمس [illegible] ۔

دعا گو محمد عبد الحق از گوجرانوالہ [illegible] حال [illegible]

کیفیت ضلع میں اسکو وجہ سے دیر ہوئی کہ بیمار ہو گیا تھا ۔ [illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

language ... [illegible] ... have appreciated the Journal's attitude. It is only that way any good could be done to the States people. It is not like dealing with British India where there is greater freedom of the Press.

If I could be of any assistance either to Mr. Pathik or any other friend of the Sttates, you may rest assured my best services will be at their disposal.

With very kind regards, and good wishes,

I am, fraternally yours,

R. Venkataraman

India States Journal.
Empire Building.
Hornby Rd. Bombay.

Perhaps if you ask him he will help with cash.

149
146
201
201

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(147) 150

श्री मान कुंवर साहब रतन लाल जी भामावत
चिरंजी आनंद से प्यारा की जैरामजी की व
नमस्कार अर्ज है। यहां आप की कृपा से कुशल
पूर्वक हूं आप का पामाला। सेहत कुशल पूर्वक [illegible]
रखते आप को सब हाल आनंद में शाद किया
और फिर सुनाता हूं कि मेरे लिये कोई आप
कोशिश हो सके तो मैं भी पधीन [illegible] चरण कमलों
में रहना और तुम्हीं कुंवर [illegible] रहते मेरे
आप का यहां पर सब हाल [illegible] मेरे
[illegible] नहीं और यहां से
लेके [illegible] सुचना की प्रकाशित के निमित्त भेजा
और अगर आप की आज्ञा होवे तो अवश्य लिखें
यहां [illegible] भानजी अजमेर आप के सेवामें
[illegible] होने निमित्त रवाना हुए थे लेकिन
[illegible] स्टेशन पर शोभालाल जी पहुंचे। और
मेरा [illegible] को बहुत है उन्होंने कहा
कि मुझे [illegible] दिखाया इस लिये में रवाना [illegible]
सूचना प्रकाशित के वास्ते मुझे अवश्य सूचना देवें
व मेरा आने व न आने के विषय में अवश्य लिखें

203

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(150) (153)

Dear Mr. Ghosh,

As I promised you that I am going to Delhi, I cam here last night and saw Mr. Shankar Lal and had a long talk with him. As I told you, while at Ajmer, the delay having occured in negotiating the loan, on account of myself being in Jail, L. Shankar Lal has dropped the idea of starting the Sugar Factory because, as you must be knowing, the sugar cane season begins in November. So if a loan is taken now, it means the manufacturing business can only be commenced next year, i.e. in November 1934. Further up to this time, he was withholding his money for this business, but now he has arranged for investment of the money at very good interest. So he does not feel interested at all.

But on my pressing him, that we have taken so much trouble in arranging loan, he should not ruin our efforts, he has agreed to start the factory provided the whole thing is arranged within a week, because, he says, that he cannot allow his money to remain idle.

The terms for the loan would be that the party who will advance loan of Rs.8 lacs or more at proper rate of interest, will put the money in the Bank, and before the arrival of the machinery, he will get a definite guarantee from the Bank. In case the machinery does not arrive or is not delivered, the Bank shall be responsible for the money, and after the machinery arrives, the whole machinery worth Rs. 8 lacs will be mortgaged with the person lending the money. The total cost of the machinery, railway freight, insurance duty etc will be Rs.8 lacs. The factory will cost about 14 lacs. If your party is prepared to invest 7 lacs, then L. Shankar Lal is prepared to mortgage the whole factory with him, otherwise only machinery valuing Rs. 8 lacs will be mortgaged with the party. The other suggestion is that let the party buy debentures of that amount. The debenture holder will have absolutely first lien over whole of the factory.

207

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

Regarding the other party who desires to have some share in the Managing Agency by advancing money on loan, L. Shankar Lal is not anxious to have any party as a partner in the Managing Agency but prefers to have the loan. But if you think that money can be had sooner from that party on giving a share in the Managing Agency, then let him give 5 lacs as loan and he may buy few shares for   share in the Managing Agency. So this is all the detail. I am enclosing the names of the Directors etc of the Company. So you will get this letter tomorrow. You must come over here by 26th as L. Shankar Lal is proceeding to Lahore today and will be back on 26th morning and will leave again for Allahabad the same night. Therefore we must have a talk with him on 26th otherwise our efforts for negotiating this bargain will be in vain.

Yours sincerely,

215 209

HR.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

155

(152)

P.S. I may inform you further that although, as you will see from a copy of the Articles of Association, that a regular company has been registered, which is a Company having its own separate existence, but in reality, the fact is that it is more or less a "TROPICAL" concern, a copy of whose Prospectus and last Valuation Report I am enclosing herewith for your perusal so that you may know the position of the Tropical Insurance Company and the people behind it. Practically all the money will be theirs, either in the shape of share money or as a loan. So this is, as I have written, a more or less "TROPICAL" concern, and the party with whom you are arranging a loan, can be satisfied of the position of the Company with which they have to deal ~~and of the~~ financially and otherwise. So I think there will be no difficulty in settling all these things.

211

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(155) Lahore City
17.7.28

श्री ... में श्रीमान् घाटक साहिब,
नमस्ते" मैं आपके पास रिआसत
रिआसत थिओग व रिआसत क्योंथल
के मेमोरिअल रवाने करता
हूं आप इनको मुलाहजा करें
और इस वक्त रिआसत
थिओग इलाके से बाहिर
निकली बैठी है" आप उनकी
रहनुमाई के लिये शिमला में
पहुंच सकते हैं या न?
जवाब वापसी डाक देकर
कृतारथ करें"

L1.4.28 24

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

To
Sri Pathak Sahib
Office C/o Sewa Sang
Ajmer City

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

द. २५.६.७५ (153)

[illegible] बम्बई

भाई श्री पृथ्वि सिंह जी,

कार्ड मिला - [illegible]

मजूरा [illegible] की कमी है। [illegible]

सामान भी होगा। [illegible]

हो सकता है।

भरतपुर में किशान [illegible]

देशद्रोही ने [illegible] कानून

लिया है। पैसा [illegible] सत्ता का इस्तेमा

ने अपने [illegible] स्वार्थों में

उपयोग किया है। इसका बहुत बड़ा

[illegible] सामन्तशाही [illegible]

[illegible] किसानों के हित की

[illegible] कर सकते [illegible]

[illegible] हो जाता है [illegible]

यहां के [illegible] उनको

सिलसिला होगा।

मैं २० दिन में [illegible]

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

[illegible] सोच रहा हूँ [illegible]
[illegible] पहले [illegible]
[illegible] में जन साधारण के
हि[illegible] में कोई [illegible]
है [illegible] — [illegible] में न
[illegible]
दिया है [illegible]
भी [illegible] हैं [illegible]
पर [illegible]
[illegible]
[illegible]

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

27 [illegible] 9

श्रीयुत ना. विजयसिंह जी
पथिक – [illegible] निवास
[illegible]
मथुरा
[illegible]
यू. पी.

(158)

J C. 5016 (161)

POST OFFICE,
GWALIOR STATE.

No. 3966

From

THE POSTMASTER-GENERAL,

GWALIOR STATE,

Lashkar

To

Enclosures——

Mr B. S. Pathak
The All India States Peoples
Conference Ajmere

Dated the 18-9-1928.

Sir,

In continuation of this office letter No: 2410/14.8.28 I have the honour to say that necessary enquiries have been made into the matters, but the unregistered articles under complaint is not traceable.

I have etc

[signature] 18/9
for POSTMASTER-GENERAL,
GWALIOR STATE.

217

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(159)

I.C.S.O. 28

(162)

No. 4475 of 1929.

FROM C.P. Luck Esquire, I.P.S.,

~~XXX~~ SUPERINTENDENT OF POLICE,

Ajmer-Merwara,

To

THE Editor,

Rajsthan Sandesh,

Ajmer

Dated Ajmer, the 21 June 1929.

~~SIR,~~

Dear Sir,

~~Please~~ send in future the copies of your paper to the Inspector General of Police Mount Abu and not to the wrong address as given on your paper.

Yours faithfully,

[signature]

Superintendent of Police,

Ajmer Merwara.

219

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(160) 163

श्री. दयालदास जी से

२२ मेम्बरों के नाम के

१०११ रुपये [illegible]

मेने [illegible]

[illegible]

जोशी

ता. २५।१२।३८

221

(164)

ON HIS MAJESTY'S SERVICE.

(161)

B. B. Pathik Esquire,

Ajmer

M R Goyal
Steno

Commissioner Ajmer-Merwara.

2223

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

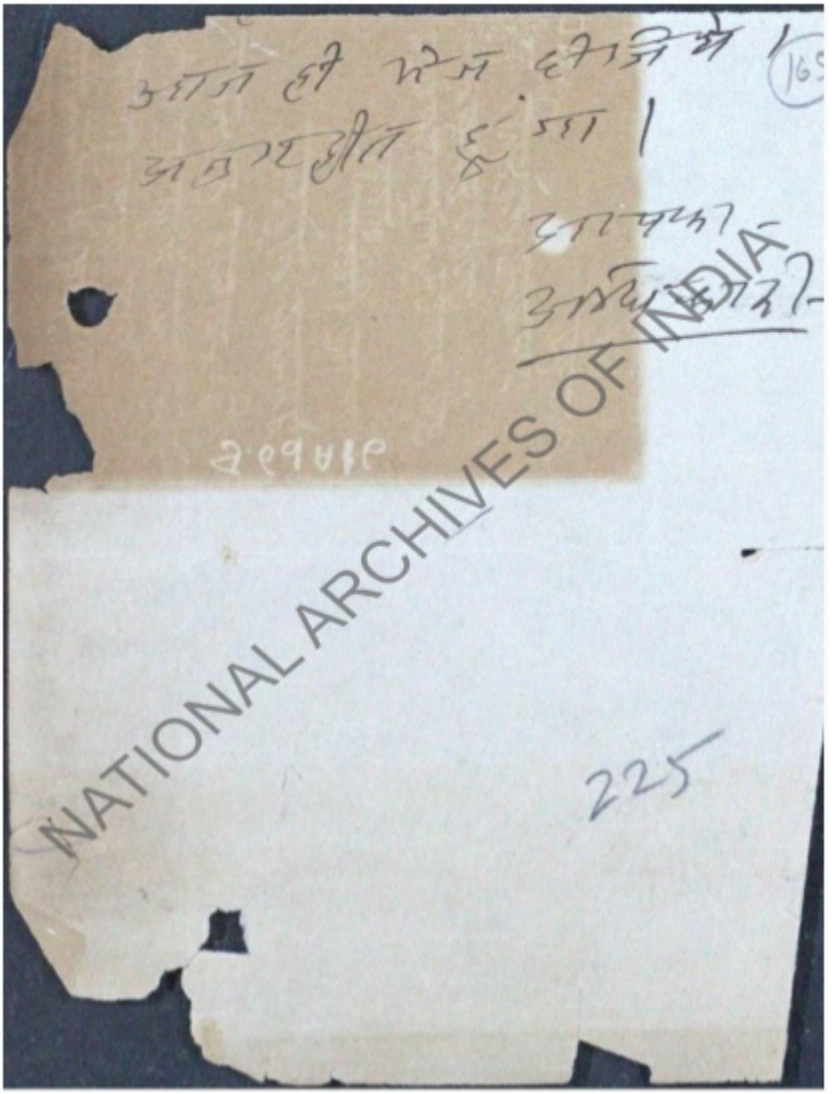

आज ही भेज दीजिये । (165)

आशा है ठीक हूंगा ।

आपका

[illegible]

225

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(166)

/ JGdA-15

(162)

... मधुरेश भवन,

[illegible]

[illegible] ।

२३.[illegible].२५.

प्रियवर श्री [illegible] जी महाराज,

[illegible] । मुझे अपने

[illegible] में श्री [illegible]-

[illegible] जी से आवश्यक परा-

मर्श [illegible] है । यदि वे

[illegible] के [illegible]

में [illegible] न [illegible]

[illegible], उन्हें

225

223

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

॥ श्री ॥

(163) (167)

॥ श्रीमान् महान् भक्त पीता तुल्य श्री पथीकु जी बावजी

राज स्थान सेवा संघ – भरी श्री श्री चोधरी सा० वन्दे ॥

मेने पहले चिट्ठी दि ओर तरुण की आया कि भाई जो संघ जाल इनका भाई पर मंगाई – परंतु ४ हफ्ता से तरुण समुच्चय बन्द है : न : भाई कांचि घरा [illegible] न इन भाई पास –   वास्ते अभी मेरी हाथ जोड़ आप सब भायो से अरज है : के : कृपा कर के – तरुण अब मेले काली घर केथण जयपुर पर आता था वाही भेजदे – जेस्या जाल ने [illegible] के : नामेही मंगाना कह दिया है   गलती माफ करें

गीरफ्तो में धरमींड पुखराज सीद पडा हुवा है और सच मुद्दर भी धर : गाड़ा गये है : वास्ते वे : वहां (अजमेर) जाने त्यार हुवा ही था : के : इनो ने अजेरी कर मुझे धरम का : [illegible] दे कर : छुड़ा दिया है अब तो – श्री पथीक जी बावजी : ओरोप से पधारे पर : आ ऊपर : हाजीर होवुगा

बावजी ओरोप पधारे और ४ रोज पहले डाकि घासभाई [illegible] खबर दे : मैं पाऊन पर ही : दर्शन करुगा :

गीरफ्तों में : आप होनला – रुठ गई परंतु राज कोः को के बटवाने में परेड जोग का : भए हुवे है पाने भो बिगाड़े वोही – बीगड़े है : बाकी हजारो [illegible] सन्याशीपा पे : होनसा गी होली स्वराप नरीपीतो चोदी नहीं करते : ओर – धरम री श्रए नजर छोड़ चल रहे ही है : वो : न बीगड़े – ईसी जाये : बेठना है :

बारोठ आवुट मार दीन फोज २ बरस कर [illegible] गया अच्छी नहीं हुवा है : जोग : धीरट भै है !

तरुण ~~[illegible]~~ तरुण दया कर चालु करदें मेरे तो जेड संघ ही : पर सरको पत्री हुइ है ! सब हुए हो रहा है : वो आप की ही कृपा है ! मैं सेघ का : बच्चा हु : माफ करो भले कन्दे :

ता : ११ - ७ - १८ ई० छी : आप का : सेपक [illegible]
मु. [illegible] ॥ 227

(164)

(168)

To

The owner of the Rajistan Sandes Press Moondri Mohallah, Ajmer.

Through The Manager Rajistan Sandes Press, Ajmer.

Sir,

With due respect I beg to say you that I want to resign the press for I do not want to serve in this press any more. Kindly grant my resignation and let my account be cleared with in twenty four hours; for which I shall be much Thankful to you.

229

Df 20 9/29

Yours obediently
Abdul Hafeez
Press man
Idgah Chand Baori
Ajmer

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

169

(165)

As you left our Press & work without any intimation day before yesterday, this resignation can not be accepted as in order & your case will be dealt with according to Press Rules.

Besides, you had spoiled the Press machine which we had to get repaired with great difficulty.

B.S. Pathik
20/9/29.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(170)

(166)

ओं. मुन्ध्याल ... बाग नडनगर

B.B.C.J.Ry

S.M.5.

माननीय पाधिकजी

मि. बूरहालैंड श्रीमहाराना उदयपुर के नाम की चिट्ठी मिलनकी मुझको अत्यन्त ही आवश्यकता है। संभव है तो उद्योग करने पर भी उसकी चिट्ठी न मिल सकी। कदाचित आपके पास हो। इसलिए आपसे प्रार्थी हूं कि ऊपर लिखे पते पर उसे भेजने की अनुकम्पा कीजिये

भवदीय

अजमेर २६/१०/२८

कन्हैयासिंह भाटी

231

229

(167) (171)

THE STATE UNIVERSITY OF IOWA
IOWA CITY
DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE

BENJ. F. SHAMBAUGH, PROFESSOR
FRANK E. HORACK, PROFESSOR
KIRK H. PORTER, PROFESSOR
J. VAN DER ZEE, ASSOCIATE PROFESSOR
JOHN E. BRIGGS, ASSOCIATE PROFESSOR
IVAN L. POLLOCK, ASSOCIATE PROFESSOR

GEO. F. ROBESON, ASSOCIATE PROFESSOR
SUDHINDRA BOSE, LECTURER
HERMAN H. TRACHSEL, ASSOCIATE
DOROTHY SCHAFFTER, INSTRUCTOR
ROY E. BROWN, ASSISTANT

August 12, 1929

Dear Sir:

Your letter requesting an article has been received. I note that you wish this article to reach you before the end of this month, which is a physical impossibility. I am sorry.

With best wishes, I remain

Cordially yours

Sudhindra Bose

Dr. Sudhindra Bose

Sj. B. S. Pathik
Editor, Rajasthan Sandesh
Ajmer, India

233

SB:DW

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(172)

(168)

Received an envolep addressed to the Commissioner Ajmer-Merwara Ajmer by Mr, B. S. Pathik, Rajasthan Publishing House, Ajmer. No; 967.

Behari Lal Shadal
Signature 14.3/32

D/-14th March 1932.

235

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA

(169) (179)

MUKUND DESAI
JOURNALIST.

Post Box No. 693.
BOMBAY, 31st Aug 1934

Ref: File No. 57

Editor,
The Rajasthan Sandesh
Ajmer

Sir,

Foreign Newspaper Cuttings and Extract service I am starting a service by which I supply papers in this coutry with cuttings and extracts from foreign newspapers. The charge for the said service is Rs 300 a year payable every quarterly in advance. For a trifling sum of Rs 25/- a monthly you get an intelligently selected materials for your columns. The exclusive rights will be available for your district if I have not in the meanwhile agreed with any other paper. Will you please let me know whether I should count upon your valued support in this venture.

CONGRESS WEEK:- If you are not going to make any other arrangements regarding receiving news of the Congress week over the wires, I should thank you to give me an opportunity to act as your special correspondent to send you exclusive news in your district. Just to defray out of pocket expenses I would charge you for the Congress week a nominal sum of Rs 15/-, and you will have to open in my favour a bearing message facility which please note.

Your Weekly Bombay letters:- If you are interested in getting for your paper weekly budget of news, I would like to send you my weekly notes with exclusive rights so far your area is concerned on a nominal charge which will just suit your purse. Please let me hear from you in this direction.

Your Bombay office:- At the request of various friends I am inviting the support of upcountry journals who desire to have their own office in Bombay with a view to canvass advertisements for their paper. Each will have to contribute a monthly sum of Rs 15/- for one year towards office rent, use of phone and other incidental charges and allow also usual commission on business secured.

If you are interested kindly let me have your two specimen copies, contract forms, advt.rates ,terms conditions Etc. stating what commission you would allow.

257

Yours truly,
Mukund Desai.

NATIONAL ARCHIVES OF INDIA